भारत के संगीत वाद्य

MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA

2

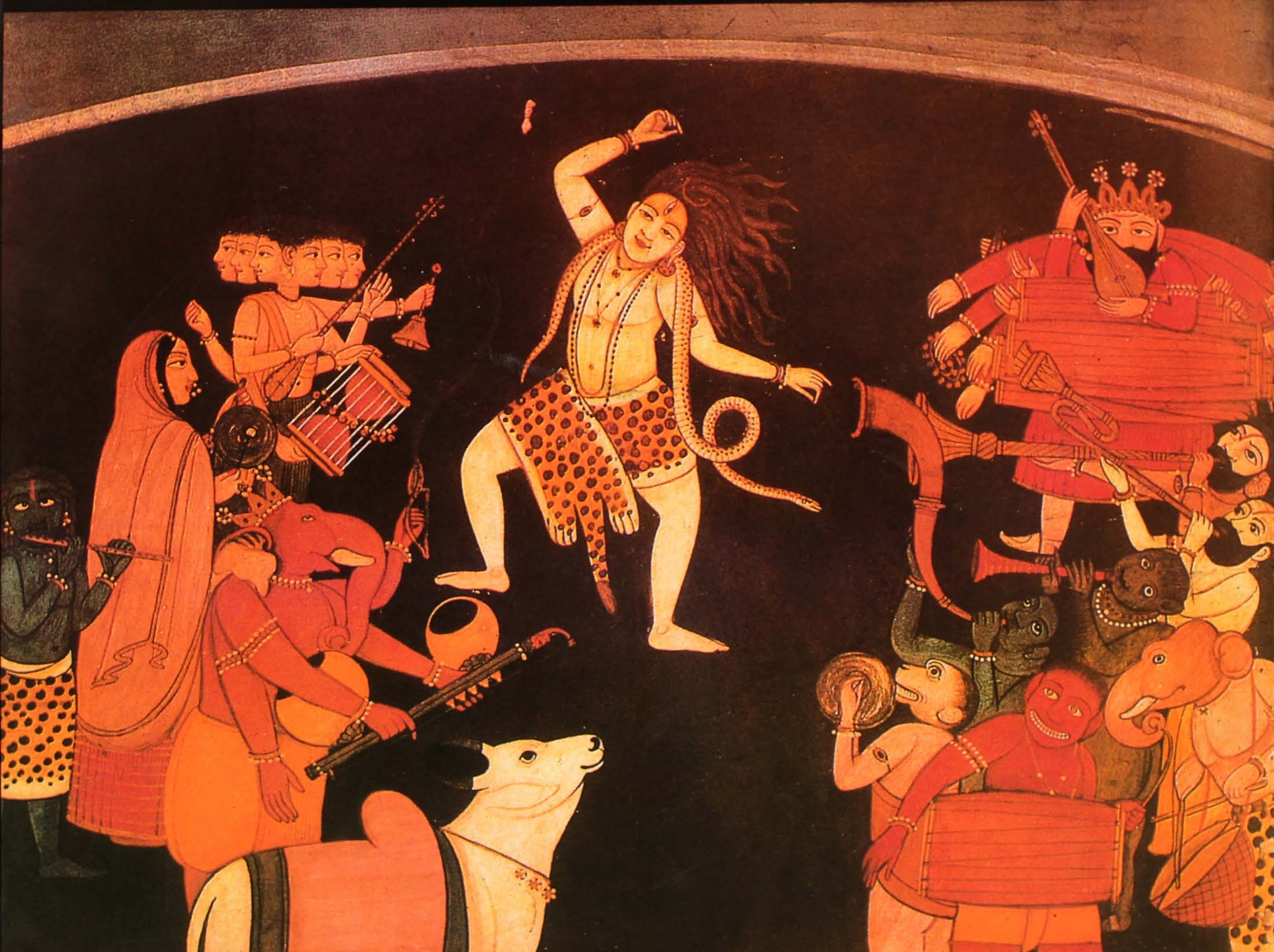

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
2

1. वायु (सुषिर) वाद्य, चित्र, भीमबेटका, मध्य प्रदेश

प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक बहुत से शिल्पों तथा चित्रों मे सुषिर वाद्यों या हवा के वाद्यों को प्रदर्शित किया गया है। यह चित्र मध्य प्रदेश में भोपाल के निकट, भीमबेटका की गुफाओं से लिए गए एक चित्र को प्रदर्शित करता है। यहां पर दिखाया गया सुषिर वाद्य एक प्रकार की तुरही (भोंपू) है। हमारे पास इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि किस आधार पर गुफावासियों ने इस वाद्य का नामकरण किया था।

1. Wind Instruments, Painting, Bhimbetka, Madhya Pradesh

Wind instruments have been depicted in many sculptures and paintings from prehistoric times to date. This picture shows a painting in the caves from Bhimbetka near Bhopal, in Madhya Pradesh. The wind instrument shown here is a kind of trumpet, however, we do not have any information on what the cave dwellers might have named it.

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
2

2. बांसुरी

इस चित्र में कलाकार एक सपाट बांसुरी बजा रहा है। बांसुरी का यह प्रकार धीमी गति के स्वर-समूह अथवा भारतीय संगीत में आलाप बजाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है। बांसुरी का यह प्रकार मंच-प्रदर्शन में लोकप्रिय है। हरिप्रसाद चौरसिया, सिक्किल बहनें और एन. रमानी वर्तमान समय के प्रमुख प्रसिद्ध बांसुरी वादक हैं।

2. Flute

This picture shows an artist playing on an horizontal flute. This type is best suited to playing the slower passages or the alap in Indian music and is popular on the concert platform. Prominent flutists today are Hari Prasad Chaurasia, the Sikkil sisters and N. Ramani.

3. विविध नृत्य शैलियों में बांसुरी की मुद्रा

नृत्य की प्रायः सभी शैलियों में बांसुरी बजाने की मुद्रा प्रदर्शित की गई है। विविध प्रदेशों के नृत्यों में बांसुरी पर हाथों तथा अंगुलियों को रखने का ढंग भिन्न-भिन्न होता है और भरतनाट्यम्, कथक, ओडिसी, मणिपुरी और कथककली जैसे नृत्यों में बांसुरी की मुद्रा को प्रदर्शित करने के लिए हाथों को रखने के ढंग में थोड़ा-सा अन्तर होता है। हालांकि यह नृत्य शैलियां विविध राज्यों में उत्पन्न हुई पर अब सम्पूर्ण देश में इनका प्रदर्शन होता है। इन नृत्य शैलियों सहित अन्य कई शैलियां बाहर के बहुत से देशों में प्रदर्शित की जाती हैं तथा सराही जाती हैं।

3. Gesture for flute in Dance forms

The gesture for playing the flute is depicted in almost all the dance styles. The position of the hands and the fingers vary in dances belonging to different regions and there are slight variations in the position of the hands for portraying the gesture in dance forms like Bharatnatyam, Kathak, Odissi, Manipuri and Kathakali. Though these dances originated in different states, they are now performed all over the country. These dance styles and many other forms are also being performed and appreciated in many countries abroad.

4. परम्परागत कालीघाट चित्र, 19वीं सदी

कृष्ण को बांसुरी वादक के रुप में, विविध कालों में, सारे देश की बहुसंख्यक शैलियों के चित्रों में प्रदर्शित (चित्रित) किया गया है। इस चित्र में कृष्ण को उसके पाशर्व में खड़ी राधा के साथ बांसुरी बजाते हुए दर्शाया गया है। यह पश्चिमी बंगाल का कालीघाट चित्र है, जो कि अपनी आकृतियों के सुस्पष्ट रेखांकन और रंगों के प्रभावशाली उपयोग के लिए जाना जाता है।

4. Traditional Kalighat Painting, 19th Century

Krishna as the flute player has been depicted in painting in numerous styles all over the country in different periods of time. This picture shows Krishna playing the flute with Radha standing beside him. This is a Kalighat painting of West Bengal which is known for its bold drawing of figures and dramatic use of colours.

5. गीत गोविन्द, चित्र, राधा के साथ कृष्ण, पूर्व 18वीं शताब्दी

भारतीय चित्रकला में कृष्ण का चित्रण बांसुरी वादक के रूप में एक सर्वाधिक विषय वस्तु है। प्रस्तुत चित्र, पूर्व 18वीं शताब्दी के गीत गोविन्द की सचित्र पांडुलिपि से लिया गया है। इस चित्र में, कृष्ण बांसुरी बजा रहे हैं जबकि राधा ने अपने हाथ में कमल का फूल पकड़ा हुआ है।

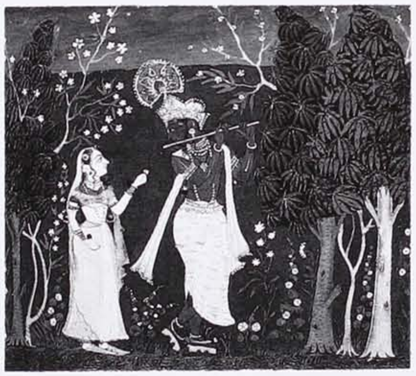

5. Gita Govinda, Painting, Krishna with Radha, early 18th Century

Krishna as a flute player is a well known theme of Indian painting. This painting is from the illustrated manuscript of Gita Govinda of early eighteenth century. In this picture, Krishna is playing the flute while Radha is holding a lotus in her hand.

6. अलगोज़ा

पंजाब का अलगोज़ा और उत्तर भारत के अन्य भागों में पाया जाने वाला अलगोज़ा दोहरी बांसुरी का एक दिलचस्प नमूना है। इसमें दो बांसुरियां भली प्रकार एक-दूसरे से जुड़ी हो सकती हैं या फिर दोनों को खुला करके हाथों में पकड़ा जा सकता है। इनको एक के बाद एक करके बजाया जाता है। दोनों में से एक बांसुरी केवल मूल स्वर प्रदान करती हैं, जबकि दूसरी को राग इत्यादि बजाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। अलगोज़ा से मिलता-जुलता एक वाद्य राजस्थान में बहुत मिलता है। इसे 'सतारा' के नाम से जाना जाता है पर यह अलगोज़ा से थोड़ा-सा लम्बा होता है और उसका सप्तक भिन्न होता है।

6. Algoza

The Algoza from Punjab and other parts of North India is an interesting variety of the double flute. Two flutes may be tightly fixed to each other or the two can be held loosely in the hands. They are blown into simultaneously, though, one of them provides only the drone or basic note while the other is used for playing the melody. Similar to the Algoza but slightly longer and of a different pitch is an instrument mostly found in Rajasthan known as the Satara.

7. शहनाई

शहनाई एक कम्पिका युक्त वाद्य है। इसमें नलिका के ऊपर सात छिद्र होते हैं। इन छिद्रों को अंगुलियों से बंद करने और खोलने पर राग बजाया जा सकता है। इस वाद्य को ''मंगल वाद्य'' के नाम से जाना जाता है और अक्सर इसे उत्तर भारत में विवाह, मंदिर उत्सवों आदि के मंगल अवसर पर बजाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि शहनाई भारत में पश्चिम एशिया से आई। कुछ अन्य विद्वान भी हैं, जो यह मानते हैं कि यह वाद्य चीन से आया है। इस समय यह वाद्य कार्यक्रमों में बजाया जाने वाला प्रसिद्ध वाद्य है। वाद्य की आवाज़ सुरीली होती है और यह राग संगीत को बजाने के लिए उपयुक्त है। इस शताब्दी के सन् पचास के दशक के पूर्व भाग में इस वाद्य को प्रसिद्ध बनाने का श्रेय उस्ताद बिस्मिल्लाह खान को जाता है। आज के जाने-माने शहनाई वादकों में पंडित अनंत लाल और पंडित दया शंकर का नाम प्रमुख है।

7. Shehnai

The Shehnai is a reed instrument in which there are seven holes along the tube which are used for playing the melody by opening and closing them with the fingers. It is known as a Mangal vadya and is usually played on all auspicious occasions in north India such as marriages, temple festivals, etc. The Shehnai is considered to have come to India from West Asia, there are other scholars who believe that this instrument travelled to China from India. It is now a popular instrument in concerts, the sound is very sweet and suited for playing Raga Sangeet. In the early fifties of this century, Ustad Bismillah Khan is credited for popularising this instrument. Today, Pt. Anant Lal, Pt. Daya Shankar are also noted Shehnai players.

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
2

8. नादस्वरम्

नागस्वरम् या दक्षिण प्रदेश का नादस्वरम् शहनाई से बहुत कुछ मिलता-जुलता वाद्य है। यह वाद्य बड़ा होता है और यह विवाह के समय द्वारों और मंदिर उत्सवों में बजाने के लिए उपयुक्त है। इसके आकार के कारण इसको बजाने से जो ध्वनि निकलती है, वह कम्पिका युक्त वाद्यों के परिवार के अन्य वाद्यों की तुलना मे बहुत तेज होती है।

इस कम्पिका युक्त वाद्य में राग-संगीत बजाने के लिए सात छिद्रों के अलावा नलिका के निचले हिस्से के साथ पांच अतिरिक्त छिद्र होते हैं। इन्हें बजाने के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाता, बल्कि मूल स्वर सप्तक को व्यवस्थित (समन्वित) करने के लिए प्रयोग मे लाया जाता है। इन छिद्रों में से एक या एक से अधिक छिद्रों को मोम से बंद किया जा सकता है। नादस्वरम् के साथ ताल की संगत के लिए तवल, मृदंगम्, मद्दालम् अथवा चेंडा का प्रयोग किया जाता है।

दक्षिण में नागस्वरम् शब्द का अर्थ साँप को सम्मोहित करने वाली बीन (उत्तर भारत में पुंगीं बीन) और शादी व मंदिर उत्सवों आदि में प्रचलित दोहरे कम्पिका वाद्य से ही है और इसे संगीत समारोहों में बजाया जाता है।

8. Nadaswaram

Very similar to the Shehnai, the Nagaswaram or Nadaswaram of the southern region is, however a larger instrument and is mostly suited for playing outdoors in marriage processions and temple functions. Due to its size, the sound produced is much louder than the other instruments of the family of reed instruments. This reed instrument has, apart from the seven holes for playing the melody, an additional five holes along the bottom of the tube. These are not used for playing but for adjusting the basic pitch, one or more of these holes can be plugged with wax. The accompanying percussion instruments with the Nadaswaram are the taval, mridangam, maddalam or chenda.

The word Nagaswara in the South refers both to the snake charmer's pipe (Pungi Been in North India) as also the double reed instrument popular at temple functions, marriages, etc., and now played in concerts as well.

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
2

९. पुंगी बीन

पुंगी बीन को आम तौर पर सांप को आकर्षित करने वाली बीन के नाम से जाना जाता है। इसकी बनावट बहुत दिलचस्प है। एक छोटे तुम्बे (अनुनादक) में एक नलिका को डाला जाता है। हवा तुम्बे में एकत्रित हो जाती है और फिर दो बांस अथवा कम्पिका (सरकंडे की) नलियों से होकर गुजरती है, जिन्हें निचले सिरे में डाला जाता है। दोनों नलिकाएं ध्वनि उत्पन्न करती हैं पर केवल एक से ही मूल स्वर उत्पन्न होता है। (जैसे कि दोहरी बांसुरियों में निकलता है) और दूसरी नलिका पर स्थित छिद्रों पर अंगुली रखकर हवा के आवागमन को नियंत्रित करके राग-संगीत बजाया जाता है।

9. Pungi Been

The construction of the Pungi Been, more commonly known as the snake charmer's pipe is quite interesting. A tube is inserted into a small gourd. This is used for blowing air which collects in the gourd making it pass through two bamboo or reed pipes, which are inserted into the lower end. Both pipes produce sound, but one produces only the drone (as in the double flutes) and the melody is played on the other pipe by controlling the passage of air through the finger holes.

10. मुखौटा नृत्य, भीमबेटका चित्र, मध्य प्रदेश

पूरे देश के ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों में सामूहिक नृत्यों के साथ ताल की संगत ढोल ही प्रदान करते हैं। आज भी मुखौटा नृत्य बहुत प्रचलित हैं। देश के विविध भागों के मुखौटों की अपनी प्रादेशिक विशेषताएं होती हैं। मध्य प्रदेश की भीमबेटका गुफाओं का यह चित्र 5000 वर्ष पुराना है। यह चित्र नर्तकों के एक समूह को प्रदर्शित करता है। चित्र में एक नर्तक ने मुखौटा पहना हुआ है और अन्य व्यक्ति समतल (अंकया) और गले से लगे (आलिंग्य) ढोलों को बजा रहे हैं।

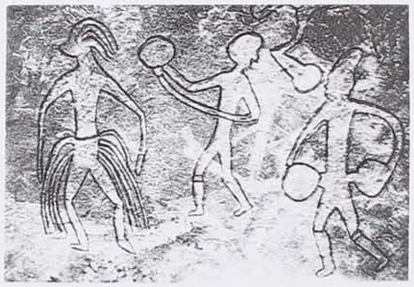

10. Masked Dances, Bhimbetka Painting, Madhya Pradesh

All over the country, drums provide rhythmic accompaniment to group dances being performed in the rural and tribal areas. Masked dances are very popular even today, the masks from different parts of the country have their own regional peculiarities. This painting from the Bhimbetka caves of Madhya Pradesh which is 5000 years old shows a group of dancers. One dancer is wearing a mask and others are playing the horizontal (Ankya) and the embraced (Alingya) type of drums.

11. तबला

तबले की जोड़ी दो लम्बवत् ऊर्ध्वक ढोलों का एक समूह है। इसके दायें हिस्से को तबला कहा जाता है और बांये हिस्से को बांया अथवा 'डग्गा' कहते हैं। तबला लकड़ी का बना होता है। इस लकड़ी के ऊपरी हिस्से को पशु की खाल से ढंका जाता है और चमड़े की पट्टियों की सहायता से जोड़ा जाता है। चर्म पट्टियों तथा लकड़ी के ढांचे के बीच आयताकार (चौकोर) लकड़ी के गट्टे रखे जाते हैं। इन्हें तबले के स्वर में मिलाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। पशु की खाल के हिस्से के बीच में स्याही का मिश्रण लगाया जाता है। तबले को हथौड़ी से ऊपरी हिस्से के किनारों को ठोंक कर उपयुक्त स्वर में मिलाया जा सकता है। बांया हिस्सा मिट्टी अथवा धातु का बना होता है। इसका ऊपरी हिस्सा पशु की खाल से ढका जाता है और उस पर भी **स्याही** का मिश्रण लगाया जाता है। कुछ संगीतकार इस हिस्से को सही स्वर में नहीं मिलाते।

तबले की जोड़ी को हिन्दुस्तानी संगीत के कंठ तथा वाद्य-संगीत और उत्तर भारत की कई नृत्य शैलियों के साथ संगत प्रदान करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। तबले पर हिन्दुस्तानी संगीत के कठिन ताल भी बहुत प्रवीणता के साथ-साथ बजाए जाते हैं। वर्तमान समय के कुछ प्रमुख तबला वादक हैं — उस्ताद अल्ला रक्खा खां और उनके सुपुत्र ज़ाकिर हुसैन, शफ़ात अहमद और समता प्रसाद।

11. Tabla

The Tabla pair is a set of two vertical Oordhwaka drums. The right side is called the Tabla and the left, the Bayan or Dagga. The Tabla has a wooden body with a covering of animal skin, this is held together with leather straps. Between the straps and the wooden body, oblong wooden blocks are placed. These are used for tuning the drums. There is a syahi paste applied in the centre of the animal skin, the tabla can be tuned accurately by striking the rims with a hammer. The body of the bayan is made of clay or metal and is covered with animal skin which also has *syahi* paste applied on it. Some musicians do not tune this drum to an accurate pitch.

The tabla pair is used as accompaniment to vocal and instrumental Hindustani music and with many dance forms of northern India. The complicated talas of the Hindustani music are played with great virtuosity on the tabla. Prominent musicians playing the tabla today are—Ustad Alla Rakha Khan and his son Zakir Hussain, Shafat Ahmed and Samata Prasad to name a few.

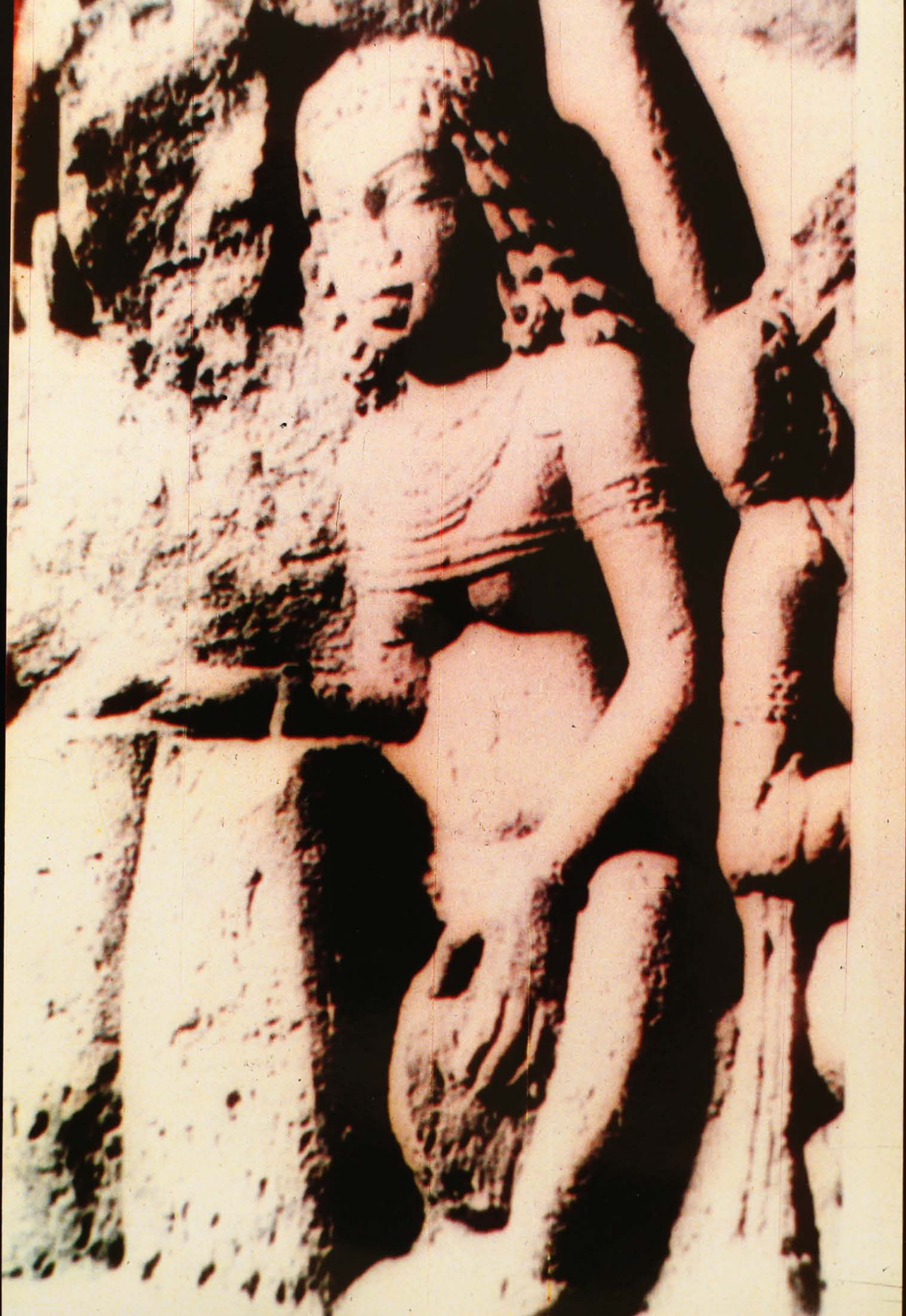

12. अजंता ढोल, शिल्प, महाराष्ट्र

पुस्तकों में प्राप्त होने वाले उल्लेख के अतिरिक्त हम प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान काल तक की शिल्प तथा चित्रकला में संगीत वाद्यों का प्रस्तुतिकरण देख सकते हैं। अजंता का प्रथम शताब्दी का यह शिल्प वादक को लम्बवत् (उर्ध्वाधर) ढोलों की एक जोड़ी के पीछे बैठा हुआ प्रदर्शित करता है। यह ढोल हमारे आज के मंच-प्रदर्शन में प्रयुक्त होने वाली तबला तथा बांया की जोड़ी से मिलते हैं।

12. Ajanta Drums, Sculpture, Maharashtra

Apart from textual references, representations of musical instruments are to be seen in sculptures and paintings from prehistoric times to the present day. The first century sculpture of Ajanta shows a musician sitting behind a pair of vertical drums. These resemble the Tabla and Bayan pair that we see on the concert platform today.

13. चेंडा

उर्ध्वक ढोलों का यह प्रकार केरल तथा कर्नाटक के कुछ हिस्सों में बहुत लोकप्रिय है। यह खोखली लकड़ी को पशु के चमड़े से मढ़ कर तथा रस्सी से कस कर बना हुआ एक लम्बवत् ढोल है। ध्यान से देखिए इस वाद्य में चमड़े की पट्टियां प्रयुक्त नहीं की जातीं। इस वाद्य को उपयुक्त स्वर में मिलाने के लिए रस्सियों को कसा जाता है तथा हथौड़ी से ऊपरी हिस्से के किनारों को ठोका जाता है। इसे डंडी (छड़ी) और अंगुलियों की सहायता से बजाया जाता है। यह प्रदेश के कथककली नृत्य, यक्षगान प्रस्तुति और अन्य आनुष्ठानिक नृत्यों और थियेटर के रूपों में प्रयुक्त किया जाने वाला एक प्रमुख ताल वाद्य है।

13. Chenda

This variety of Oordhwaka drum is very popular in Kerala and some parts of Karnataka. It is a vertical drum made of hollow wood with a covering of skin held together with ropes. Notice that leather straps are not used in this instrument. The tuning is done by tightening the ropes and striking the rims with a hammer. It is played by using a stick and the fingers. It is one of the prominent percussion instruments used in Kathakali dance, Yakshagana performances and many other traditional and ritual dance and theatre forms of the region.

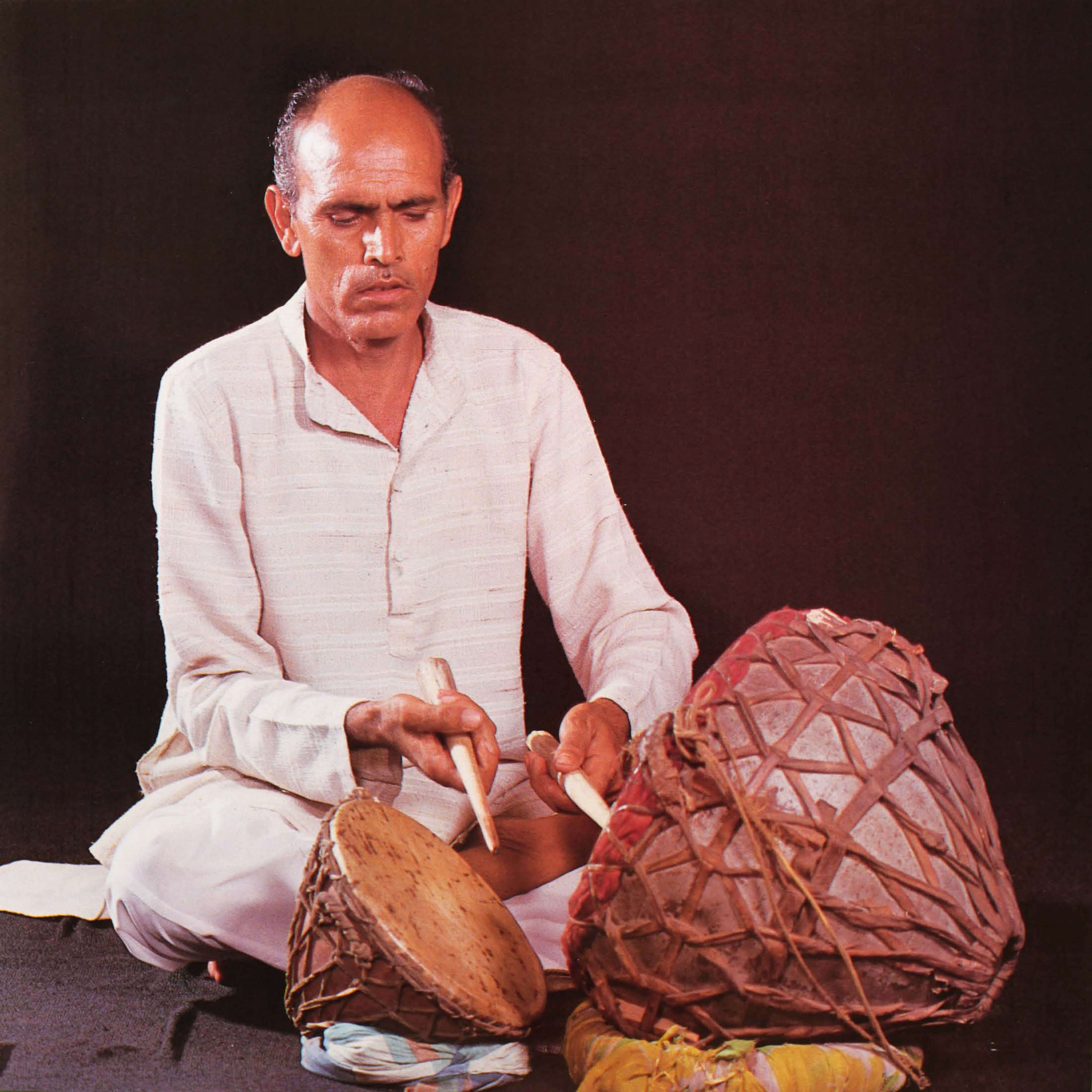

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
2

14. नगाड़ा

नगाड़ा छोटे लम्बवत् (उर्ध्वाधर) ढोलों का एक प्रकार है, जो आम तौर पर लोक संगीत को संगत प्रदान करता है। विद्वानों का मानना है कि इस ढोल का नाम पश्चिम एशिया के **नक्कारा** से लिया गया है। बहुत से शहनाई वादक तबले की जोड़ी के साथ नगाड़ा ढोलों को संगत देने के लिए प्रयोग में लाते हैं, ताकि मंच-प्रदर्शन में ताल की संगत मिल सके। नगाड़े की जोड़ी में दो शंकु आकार के ढोल होते हैं। यह विविध आकारों के होते हैं। छोटे ढोल को ''**झील**'' अथवा ''**माड़ी**'' के नाम से और बड़े को ''**नूर**'' के नाम से जाना जाता है। आकार में विविधता के कारण दोनों ही ढोलों का स्वर-मान, स्वर की ऊंचाई भिन्न होती है। नगाड़े की जोड़ी आकार में छोटी होती है इसलिए इसे आसानी से इधर-उधर ले जाया जा सकता है और इसे ऊंटों तथा घोड़ों पर ले जाते हुए देखा जा सकता है।

14. Nagara

The Nagara is a variety of small vertical drums which usually provides accompaniment to folk music. Scholars believe that the name of the drum has been derived from *naqqara* from Western Asia. Many Shehnai players use the nagara drums along with the tabla pair to provide rhythmic accompaniment in their concert performance. The nagara pair are two conical drums. They are of different sizes, the smaller referred to as *jheel* or *madi* and the larger as *Nar.* Because of the differences in size, the volume and pitch varies in both the drums. Since the Nagara pair is small in size, it is easily portable and is seen carried on backs of camels, horses etc.

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
2

15. मृदंगम्

मंच-प्रदर्शन में प्रयुक्त होने वाला मृदंगम् भारत का सबसे प्राचीन ढोल है। जैसा कि नाम से प्रतीत होता है, अब यह ढोल अवश्य ही मिट्टी से बनाया जाता होगा क्योंकि 'मृत' का अर्थ मिट्टी होता है। यह वाद्य आम तौर पर कंठ-संगीत (गायन) और वाद्य-संगीत तथा दक्षिणी प्रदेश की विविध नृत्य शैलियों के साथ संगत प्रदान करता है। आधुनिक मृदंगम् की बनावट बहुत ही साधारण है। एक खोखले लकड़ी के ढोल के दो खुले सिरों को पशु की खाल से ढ़का जाता है। इन्हें चमड़े की चर्मपट्टियों द्वारा एक-दूसरे के साथ जोड़ा जाता है, जिन्हें उपयुक्त स्वरमान (सप्तक) के अनुसार कसा जाता है। वाद्य की दाहिनी बाजू (सीधी तरफ) स्थायी रूप से स्याही से ढ़की रहती है। इस स्याही में लौह चूर्ण, गोंद, काजल इत्यादि का मिश्रण होता है। यह काला मिश्रण पशु की खाल पर लगाया जाता है, ताकि ध्वनि की संगीतात्मकता (सुर) बनी रहे। सामान्यतः पशु की खिंची हुई खाल पर आघात किए जाने से जो ध्वनि उत्पन्न होती है, उसमें नाद नहीं होता और वह कर्णप्रिय नहीं होती। स्याही लगाने पर ध्वनि में गहराई उत्पन्न होती है। ढोल के बांयी ओर कुछ नहीं लगाया जाता पर बजाने की दृष्टि से वहां पर गूंथे हुए आटे का मिश्रण लगाया जाता है। वाद्य को वादक के समक्ष रखा जाता है। वादक जमीन पर बैठ कर इसे बजाता है। भारतीय ताल पद्धति के सर्वाधिक कठिन संगीत को इस वाद्य पर बजाया जाता है। पालघाट रघु और उगायालापुरम शिवरामन् इस वाद्य को बजाने वाले लोकप्रिय वादक हैं।

15. Mridangam

The Mridangam is one of the most ancient drums in India used today on the concert platform. As the name suggests this drum must have been made of clay; Mrit, i.e., clay. It usually provides accompaniment to vocal and instrumental music and dance forms of the southern regions. The structure of the modern Mridangam is very simple. The animal hide covers the two open ends of a hollow wooden barrel. These are joined together by leather straps which can be tightened to suit the required pitch. The right hand side of the instrument has a permanent loading which is known as *syahi.* It is a combination of iron filings, glue, soot, etc. The black paste is applied to the animal skin, to allow for musicality of the sound. Normally when the stretched skin is struck, the sound produced has no resonance and is harsh to the ears. The application of this *syahi* makes the sound mellow. The left face is usually blank, but prior to playing, a paste of dough is applied to it. The instrument is held before the musician who sits on the floor. The most intricate talas of the Indian music are played on this instrument. Palaghat Raghu and Umayalapuram Sivaraman are popular artists of this instrument.

16. पखावज

पखावज भी उत्तर भारत के सर्वाधिक प्राचीन ढोलों में से एक है। यह एक लकड़ी का गोलाकार (बेलनाकार) ढोल होता है, जो बीच में से उभरा हुआ होता है और सिरे (कोने) की ओर इसका उभार कम होता है। दोनों ही खुले सिरों पर पशु की खाल को लगाया (मढ़ा) जाता है और इसे चमड़े की बडियों (पट्टियों) से एक-साथ कसा जाता है। इन चमड़े की पट्टियों को बेलनाकार लकड़ी के गठ्ठों के नीचे रखा जाता है। वाद्य को उपयुक्त स्वर में मिलाने के लिए इनका उपयोग किया जाता है। दक्षिण भारत के मृदंगम में ये बेलनाकार लकड़ी के गट्टे नहीं होते।

वाद्य को ठीक से स्वर (सुर) में मिलाने के लिए उसके किनारों को हथौड़ी से ठोका जाता है। इसको बजाते समय रखने का तरीका मृदंगम जैसा ही होता है। वाद्य को संगीतकार (वादक) के समक्ष रखा जाता है। वादक ताल देने के लिए वाद्य के दोनों सिरों पर थाप देता है। इसका एक सिरा काले रंग के मिश्रण (स्याही) से मढ़ा होता है और दूसरे सिरे पर बजाने से पूर्व गूंथा हुआ आटा लगाया जाता है। इस वाद्य से कंठ-संगीत (गायन) और वाद्य-संगीत को संगति प्रदान की जाती है और इस वाद्य से गायन की सर्वाधिक विस्तृत और परिष्कृत शैलियों 'ध्रुपद' और 'धमार' के साथ संगति की जाती है। मंच-प्रदर्शन में यह वाद्य लोकप्रिय हैं और यह वाद्य कथक तथा ओडिसी जैसी नृत्य शैलियों में ताल की संगति प्रदान करता है। पंडित गोपाल दास उच्च कोटि के पखावज वादक हैं।

16. Pakhawaj

The Pakhawaj is one of the most ancient drums of north India. It is a wooden barrel drum bulging in the middle and tapering towards the end. The animal skin placed on both open ends is held together with leather straps and beneath these are placed cylindrical wooden blocks. These are used for tuning. The Mridangam of south India does not have these cylindrical wooden blocks. Finer tuning is done by striking the rims with a hammer. The playing postion is similar to that of the Mridangam, where the instrument is placed in front of the musician who plays on both sides to provide rhythm. One side is covered with black paste—syahi, and the other has a temporary application of dough applied just before playing. The instrument accompanies vocal and instrumental music and the most elaborate and sophisticated style of singing known as Dhrupad and Dhamar. It is a popular instrument on the concert platform and also provides rhythm in dance forms such as Kathak and Odissi. A senior Pakhawaj player is Pandit Gopal Das.

17. राग मेघ मल्हार, मेवाड़, 18वीं सदी

राग मेघ मल्हार ऋत-राग है और यह वर्षा ऋतु में गाया या बजाया जाता है। विभिन्न शैलियों में रागमाला श्रृंखला के तहत् अनेक रागों को दर्शाया व चित्रित् किया गया है। प्रस्तुत चित्र में आप वर्षा का दिन होने के कारण आकाश में घिरे काले बादल, मोर और नृत्य करती नर्तकी का समतल प्रकार के ढोल अंकया को बजाता हुआ देख सकते है।

वर्षा ऋतु संपूर्ण भारत में महत्व रखती है, कारण वर्षा का आगमन शुष्क, ग्रीष्म ऋतु से राहत पहुंचाता है। हमारा कृषि प्रधान समाज खेतों की सिंचाई हेतु वर्षा पर निर्भर होता है तथा वर्षा के आगमन का उत्सुकता से इंतजार करता है।

17. Raga Meghamalhar, Mewar, 18th Century

Raga Meghamalhar is a seasonal melody and is sung or played in the rainy season. Many ragas have been visualized and painted under the Ragamala series in different schools. In this picture you see dark clouds on a rainy day, the peacock and the dancer playing on the 'ankya' variety of the horizontal drum while she dances.

The rainy season is important throughout India as it brings welcome relief from the dry hot summer. The agricuitural society, dependent on the rain for irrigation of the fields also looks forward eagerly to the rains.

18. संगीतकार, सूर्यमंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

ओड़िशा के कोणार्क के सूर्य मंदिर में संगीतकारों तथा नर्तकियों की अनेक प्रतिमाएं हैं। इनमें से कुछ समूह में दर्शायी गई हैं तो कुछ इस प्रतिमा की तरह एक अकेली नर्तकी की हैं। यहां आप नर्तकी को एक समतल ढोल बजाते हुए देख रहे हैं। इस नर्तकी के हाथ व पांव की मुद्राओं को ध्यान से देखिए, यह वर्तमान समय में प्रचलित कुछ नृत्य-रूपों में पाई जाने वाली मुद्राओं के समान हैं।

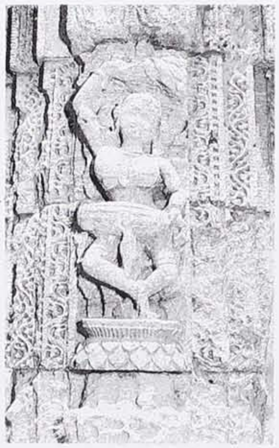

18. Musician, Surya Mandir, Konarak, Odisha

In the Surya Mandir of Konarak, Odisha, there are many sculptures of musicians and dancers, shown sometimes in groups and sometimes, as in this sculpture, a single dancer. Here you see her playing on a horizontal drum. Notice her feet and hand positions which are similar to those found in some dance forms prevalent in India today.

19. डफ

डफ ढोलाकार (बेलनाकार) बनावट के आलिंग्य वर्ग का वाद्य है। यह एक गोलाकार लकड़ी का ढांचा होता है, जिसके एक ओर पशु की खाल (चमड़ी) मढ़ी रहती है। इसे कभी-कभी बाजू के नीचे या फिर एक हाथ से कंधे के ऊपर करके पकड़ा जाता है। जबकि दूसरा हाथ थाप देने के लिए प्रयोग में लाया जाता है, ताकि ताल की उत्पत्ति हो सके।

19. Duff

The duff belongs to the category of barrel frame drums of the Alingya group. The structure is a circular wooden frame covered with skin on one side. It is sometimes held under the arm or lifted above the shoulder with one hand while the other hand is used for striking it for producing the rhythm.

20. खड़ताल वादक, चित्र, भीमबेटका, मध्य प्रदेश

भीमबेटका की गुफाओं के इस प्राचीन चित्र में हम नृत्य करते हुए कुछ मानव आकृतियों तथा उन्हें एक प्रकार का ताल वाद्य 'खड़ताल' बजाते हुए देख सकते हैं। हालांकि हम यह नहीं जानते कि प्रॉगतिहासिक काल में जो लोग इसे बजाते थे, वे इसे किस नाम से पुकारते थे।

20. Castanet Players, Painting, Bhimbetka, Madhya Pradesh

From early paintings from the Bhimbetka caves we see figures dancing and playing a type of castanets—the Khartal.

However, we do not know what they were called by the people who used these in the prehistoric times.

21. झांझ वादक, कोणार्क, ओड़िशा

ओड़िशा के कोणार्क स्थित सूर्य मंदिर में हम एक 8 फीट ऊंचा शिल्प देख सकते हैं, जिसमें एक स्त्री को झांझ बजाते हुए प्रदर्शित किया गया है।

21. Jhanj Player, Konarak, Odisha

In the Sun temple of Konarak, Odisha, we see this large sculpture nearly 8 ft. high of a lady playing the Jhanj.

22. भैरवी रागिनी, मालवा, 1680 ईसवीं सन्

इस चित्र में रागिनी भैरवी को दर्शाया गया है, जो सामान्यतः पूजा के एक दृश्य का चित्रण करता है। चित्र में संगीतकार ढोल बजा रहे हैं। गर्भ-गृह के एकदम बाहरी हिस्से में एक घण्टा और एक शंख दिखाई दे रहे हैं। यहां तक कि आज भी अनेक मंदिरों में दर्शन से पहले और दर्शन के समय धार्मिक गीत गाए जाते हैं। संगीतकार देवी के सामने वाद्य बजाते हैं, गीत गाते हैं और नृत्य करते हैं।

22. Bhairavi Ragini, Malwa, 1680 A.D.

This picture shows the Ragini Bhairavi which usually portrays a scene of worship. Musicians playing on a drum, a gong and a conch are seen just outside the Garbha Griha. Even today in many temples, devotional songs are sung before and at the time of darshan. The musicians play instruments and sing and dance before the deity.

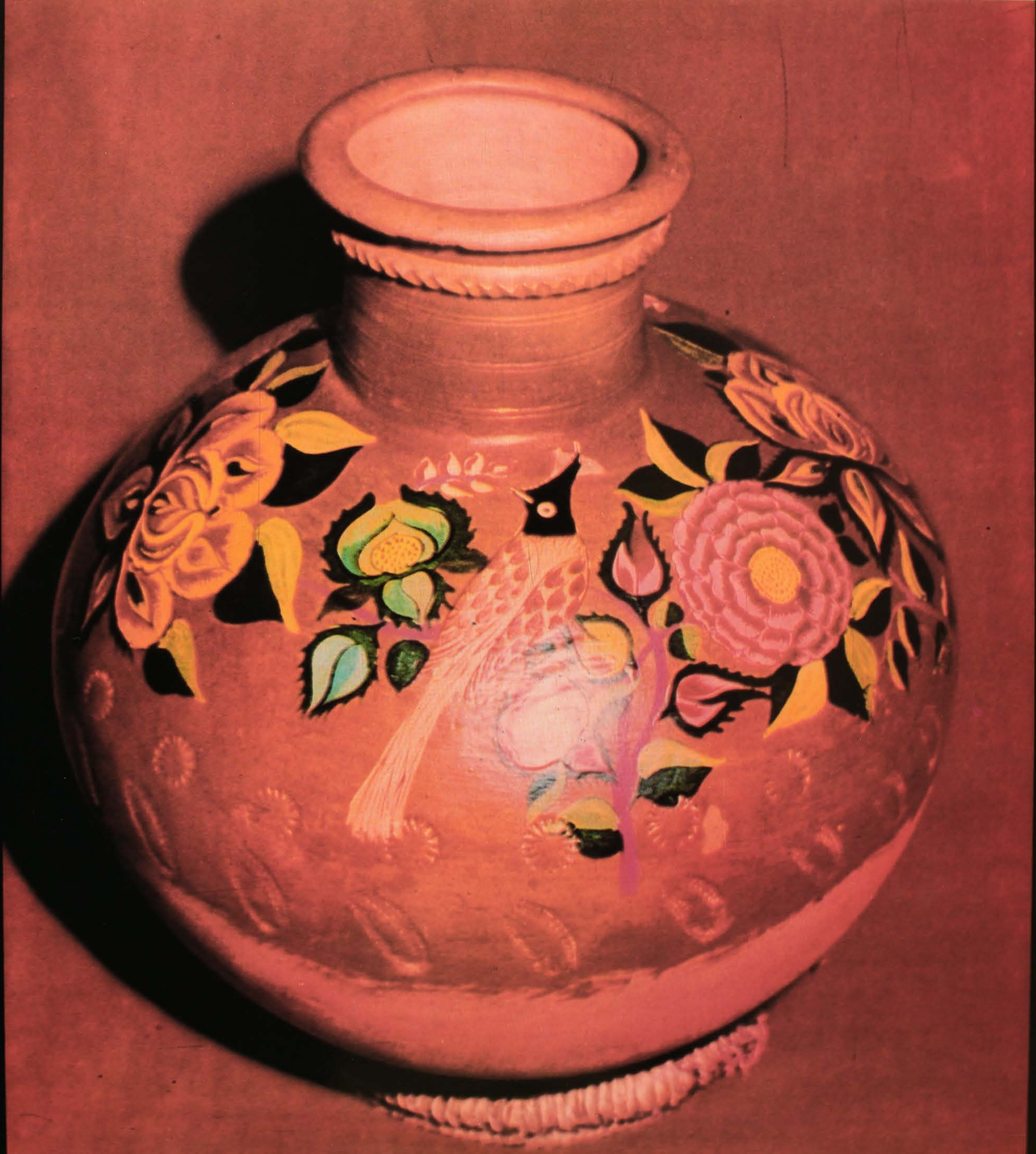

23. अलंकृत मिट्टी का घड़ा

भारत के कुछ भागों में मिट्टी के घड़े को संगीत वाद्य के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। यह वाद्य लोक तथा जनजातीय संगीत के साथ ताल की संगत देने हेतु प्रयोग में लाया जाता है। देश के कई भागों में घड़े के मुंह पर ताल देने हेतु हाथों से थाप दी जाती है।

23. Decorated Mud Pot

In several parts of India, the Mud Pot is used as a musical instrument. It provides percussion accompaniment for Folk and Tribal Music. In many parts of the country, the rim of the mouth of the pot is struck with the hands to provide rhythm.

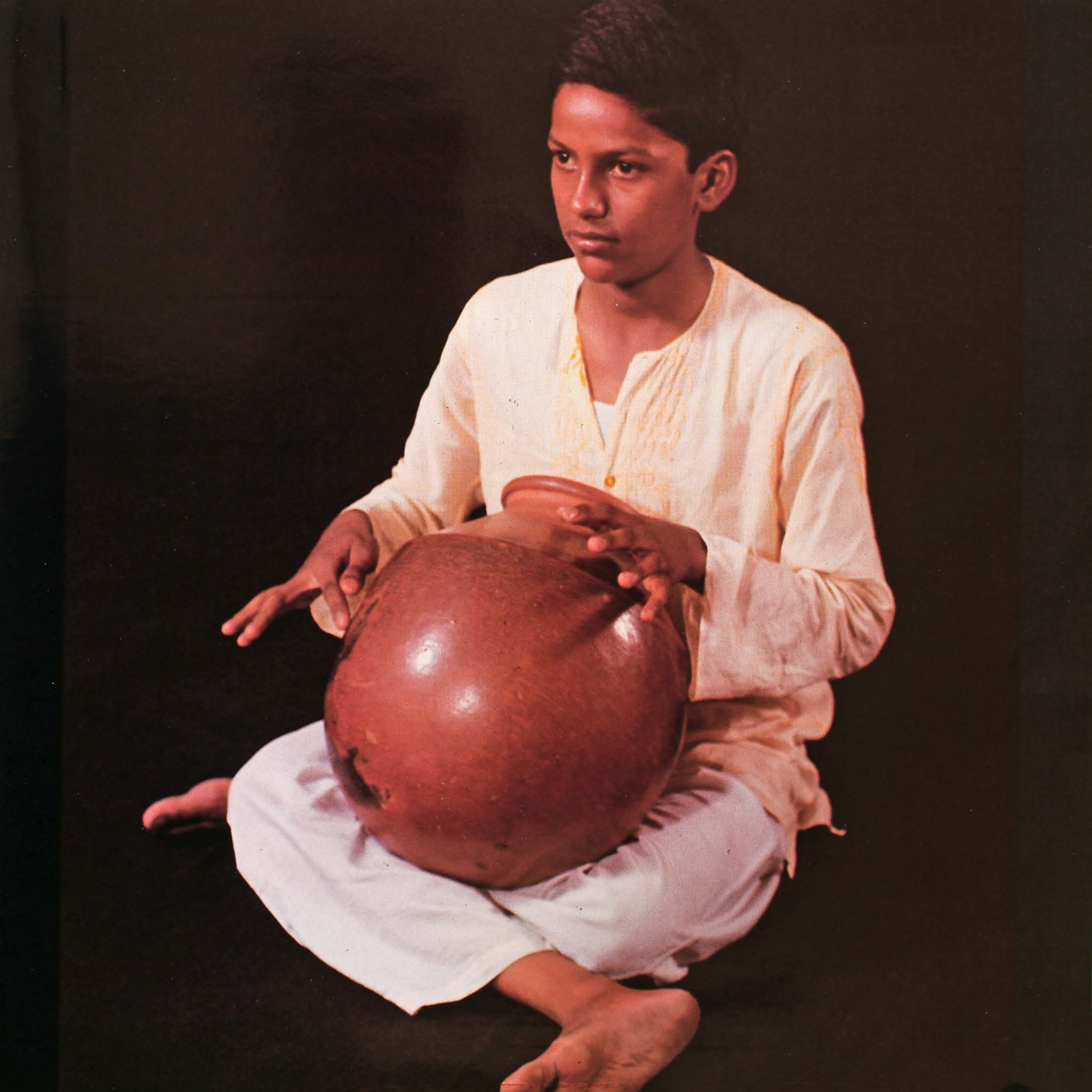

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
2

24. घटम्

केवल भोजन पकाने, अनाज तथा पानी एकत्रित करके रखने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले पात्रों (बर्तनों) ने भी संगीतकारों की कल्पना को जागृत किया है। आज कर्नाटक संगीत के मंच प्रदर्शनों में विशेष प्रकार की मिट्टी से बने तथा सावधानी से पकाए गए बर्तन ने संगीत में अपना एक विशेष स्थान बना लिया है। इस पात्र को 'घटम्' के नाम से जाता जाता है। इस विशेष रूप से पकाए गए मिट्टी के घड़े को अक्सर उलटा करके बजाया जाता है। बजाते समय इस पात्र के मुख को वादक के पेट पर रखा जाता है। कुछ वादक बजाते हुए घड़े को अपने सामने रखते हैं और बजाते हुए ज़मीन पर अंगुली से ताल देते हैं। घटम् द्वारा कंठ तथा वाद्य-संगीत को संगत प्रदान की जाती और घटम् पर कर्नाटक ताल शैली के कठिन ताल संयोजनों को बजाया जाता है। जाने-माने घटम् वादकों में के.एस. मंजुनाथ व टी.एच. विनायक रामन का नाम लिया जा सकता है।

24. Ghatam

Pots which are extensively used for cooking, storing grains and water, also inspired the imagination of the musicians. Today, pots made of special clay and carefully burnt find a place in concerts of Karnataka music. Known as the Ghatam, this specially baked mud pot is mostly held upside down with the mouth of the pot on the belly of the player. However, some musicians prefer to keep the pot before them while tapping the surface with the fingers for playing. The Ghatam accompanies both vocal and instrumental music and intricate rhythmic combinations of the Karnataka tala system are produced on this instrument. Noted artists performing on the Ghatam today are K.S. Manjunath and T.H. Vinayaka Raman.

भारत के संगीत वाद्य

भारत विश्व में, सबसे ज्यादा प्राचीन और विकसित संगीत तंत्रों में से एक का उतराधिकारी है। हमें इस परम्परा की निरंतरता का ज्ञान संगीत के ग्रंथों और प्राचीन काल से लेकर आज तक की मूर्तिकला और चित्रकला में संगीत वाद्यों के अनेक दृष्टांत उदाहरणों से मिलता है।

हमें संगीत-सम्बंधी गतिविधि का प्राचीनतम प्रमाण मध्यप्रदेश के अनेक भागों और भीमबेटका की गुफाओं में बने भित्तिचित्रों से प्राप्त होता है, जहां लगभग 10,000 वर्ष पूर्व मानव निवास करता था। इसके काफी समय बाद, हड़प्पा सभ्यता की खुदाई से भी नृत्य तथा संगीत गतिविधियों के प्रमाण मिले हैं।

संगीत वाद्य, संगीत का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हैं। इनका अध्ययन संगीत के उद्भव की जानकारी देने में सहायक होता है और वाद्य जिस जनसमूह से सम्बंधित होते हैं, उसकी संस्कृति के कई पहलुओं का भी वर्णन करते हैं। उदाहरण के लिए गज बनाने के लिए बाल, ढोल बनाने के लिए प्रयोग की जाने वाली लकड़ी या चिकनी मिट्टी या फिर वाद्यों में प्रयुक्त की जाने वाली जानवरों की खाल-यह सभी हमें उस प्रदेश विशेष की वनस्पति तथा पशु-वर्ग के विषय में बताते हैं।

दूसरी से छठी शताब्दी ईसवी सन् के संगम साहित्य में वाद्य के लिए तमिल शब्द "कारूवी" का प्रयोग मिलता है। इसका शब्दिक अर्थ औजार है, जिसे संगीत में वाद्य के अर्थ में लिया गया है।

बहुत प्राचीन वाद्य मनुष्य के शरीर के विस्तार के रूप में देखे जा सकते हैं और यहां तक कि हमें आज छड़ी और लोलक मिलते हैं। सूखे फल के बीजों के झुनझुने, औरांव के कनियानी ढांडा या सूखे सरस फल या कमर पर बंधी हुई सीपियों को ध्वनि उत्पन्न करने के लिए आज भी प्रयोग में लाया जाता है।

हाथ का हस्तवीणा के रूप में उल्लेख किया गया है, जहां हाथों व अंगुलियों को वैदिक गान की स्वरलिपि पद्धति को प्रदर्शित करने तथा ध्वनि का मुद्रा–हस्तमुद्रा के साथ समन्वय करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

200 ईसा पूर्व से 200 ईसवीं सन् के समय में भरतमुनि द्वारा संकलित नाट्यशास्त्र में संगीत वाद्यों को ध्वनि की उत्पत्ति के आधार पर चार मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है :

1. तत् वाद्य अथवा तार वाद्य	–तार युक्त वाद्य
2. सुषिर वाद्य अथवा वायु वाद्य	–हवा के वाद्य
3. अवनद्ध वाद्य और चमड़े के वाद्य	–ताल वाद्य
4. घन वाद्य या आघात वाद्य	–ठोस वाद्य, जिन्हें समस्वर स्तर में करने की आवश्यकता नहीं होती।

MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA

India is the inheritor of one of the most ancient and evolved music systems in the world. The continuity of the musical traditions of India is established through a study of musical texts and numerous visual references one finds of musical instruments in painting and sculpture from prehistoric times to the present day.

The earliest evidence of music activity is found on the walls of cave paintings at Bhimbetka and in several parts of Madhya Pradesh, which were occupied by man approximately 10,000 years ago. Much later, in the excavations of the Harappan Civilization also, evidence is available of dance and music activity.

Musical instruments are the tangible and material representation of music which is an auditory art. A study of these helps in tracing the evolution of music and also explains many aspects of the material culture of the group of people to which these instruments belong. For instance, the hair used for making the bow, the wood or clay used for making the drum, or the hide of animals used in the instruments, all these tell us about the flora and fauna of a particular region.

The Tamil word for instrument—*Karuvi* is found in Sangam literature of the 2nd to 6th century A.D., the literal meaning of which is 'tool'. This is extended to mean instrument in the context of music.

Very ancient instruments may be seen as an extension of the human body and we find even today, sticks and clappers. Dried fruit rattles, the *Kaniyani Danda* of Oraons or the dried berries or shells tied to the waist areused for producing rhythm, even today.

The hand was referred to as the *Hasta Veena*, where the hands and fingers are used to show the notation system of vedic chanting, coordinating sound with *mudra*—hand gesture.—hand gesture.

In the *Natya Shastra*, compiled by Bharat Muni dated 200 B.C.-200 A.D., musical instruments have been divided into four main categories on the basis of how sound is produced.

(i)	The Tata Vadya or Chordophones	– Stringed instruments
(ii)	The Sushira Vadya or Aerophones	– Wind instruments
(iii)	The Avanaddha Vadya or Membranophones	– Percussion instruments
(iv)	The Ghana Vadya or Idiophones	– Solid instruments which do not require tuning.

In this package we shall see a few wind and percussion instruments. India has a large variety of such instruments and only a few have been selected keeping in mind representation of the various categories.

The aim of producing the package is :

–to establish the continuity of musical traditions of India;

इस संग्रह में हम कुछ वायु वाद्य और आघात-वाद्य देखेंगे। भारत में इस तरह के वाद्यों की एक विस्तृत विविधता है और विविध वर्गों के प्रस्तुतिकरण के लिए केवल कुछ ही वाद्य चुने गए हैं।

इस संग्रह का निर्माण करने के उद्देश्य है :

– भारत की संगीत परम्परा की निरन्तरता का प्रमाण देना,
– जहां तक सम्भव हो सके, मूर्तिकला और चित्रकला में संगीत वाद्यों के चित्रण द्वारा संगीत के विकास का अध्ययन करना,
– शहर के कला-रूपों और गांवों के अंर्तसम्बंध का अध्ययन करना,
– संगीत वाद्यों की बनावट और उपयुक्त सामग्री पर आधारित ध्वनि-रचना के सिद्धांतों को समझना,
– रचनात्मक अभिव्यक्तियों के विभिन्न नियमों की आत्मनिर्भरता को स्थापित करना.
– संगीत के अध्ययन का निम्न के साथ सम्बन्ध;

भूगोल	– वन्स्पति और प्राणी-सम्बंध,
इतिहास	– इतिहास के विभिन्न कालों में संगीत वाद्यों के प्रकार तथा संगीत की विविध शैलियों का परिचय।
भाषा	– संगीत वाद्यों का वर्णन और संगीत में साहित्यिक तत्व।
विज्ञान	– संगीतात्मक नोट्स (स्वर), अंतराल, कम्पन की आवृत्ति, ध्वनि की रचना के सिद्धांत।

भारत के संगीत वाद्यों से सम्बंधित संग्रह (शैक्षणिक सामग्री) के भाग एक में हमने कुछ तत् अथवा तार वाद्यों के विषय में जानकारी प्रस्तुत की थी। अब इस संग्रह में हम अन्य तीन वर्गों के वाद्यों के कुछ छायाचित्र और रेखाचित्र देखेंगे। वह तीन वर्ग हैं:

सुषिर वाद्य	–हवा के वाद्य
अवनद्ध वाद्य	–ताल वाद्य और
धन वाद्य	–ठोस वाद्य, जिन्हें समस्वर स्तर में करने की आवश्यकता नहीं होती

सुषिर वाद्य

सुषिर वाद्यों में एक खोखली नलिका में हवा भर कर (अर्थात फूंक मार कर) ध्वनि उत्पन्न की जाती है। हवा के मार्ग को नियंत्रित करके स्वर की ऊंचाई सुनिश्चित की जाती है और वाद्य में बने छेदों को उंगलियों की सहायता से खोलकर और बंद करके क्रमशः राग को बजाया जाता है। इन सभी वाद्यों में सबसे सरल (साधारण) वाद्य है–बांसुरी। आम तौर पर बांसुरियां बांस अथवा लकड़ी से बनी होती हैं और भारतीय संगीतकार संगीतात्मक तथा स्वर-सम्बंधी विशेषताओं के कारण लकड़ी तथा बांस की बांसुरी को पसंद करते हैं। हालांकि यहां लाल चंदन की लकड़ी, काली लकड़ी, बेंत, हाथी दांत, पीतल, कांसे, चांदी और सोने की बनी बांसुरियों के भी उल्लेख प्राप्त होते हैं।

बांस से बनी बांसुरियों का व्यास साधारणतः करीब 1.9 से.मी. होता है पर चौड़े व्यास वाली बांसुरियां भी आमतौर पर उपयोग में लाई जाती हैं। 13वीं शताब्दी में शारंगदेव द्वारा लिखित संगीत सम्बंधी ग्रंथ "संगीत रत्नाकर" में हमें 18 प्रकार की बांसुरियों का उल्लेख मिलता है। बांसुरी के यह विविध प्रकार फूंक मारने वाले छेद और पहली उंगली रखने वाले छेद के बीच की दूरी पर आधारित हैं (आरेख देखें)

–to study the evolution of music through depiction of musical instruments in paintings, sculptures, wherever possible;
–to study the inter-relationship of rural and sophisticated urban art forms;
–to understand the underlying principles of sound production based on the structure of the instruments and the material used;
–to establish the inter-dependence of different disciplines of creative expressions;
–to relate the study of music to :
  - Geography—flora and fauna
  - History—introduction of various styles of music and types of musical instruments in different periods in history;
  - Language—description of musical instruments, and the literary content in music;
  - Science—principles underlying production of sound, frequency of vibrations, intervals, musical notes.

In part of the package on Musical Instruments of India we saw a few examples of *Tata Vadya* or stringed instruments. In this package we shall see some photographs and drawings of instruments of the other three categories, that is, the:

Sushira Vadya—Wind instruments
Avanaddha Vadya—Percussion instruments
Ghana Vadya—Solid instruments which do not require tuning

Sushira Vadya

In the *Sushira Vadya* group, sound is produced by blowing air into an hollow column. The pitch of the note is determined by controlling the air passage and the melody is played by using the fingers to open and close the holes in the instrument. The simplest of these instruments is the flute. Generally flutes are made of bamboo or wood and the Indian musician prefers these due to the tonal and musical attributes of these materials. However, there are references of flutes made of red sandalwood, black wood, cane, ivory, bronze, silver and gold also.

The diameter of the bamboo flutes is usually about 1.9 cms; though, flutes with wider diameters are also commonly used. The musical text *Sangeet Ratnakar* written in the 13th century by Sharangdev refers to 18 kinds of flutes. These categories are based on the distance between the blow hole and the first finger hole (see diagram).

Excavations of the Indus civilizations have shown bird whistles of clay, and seals which show wind and percussion

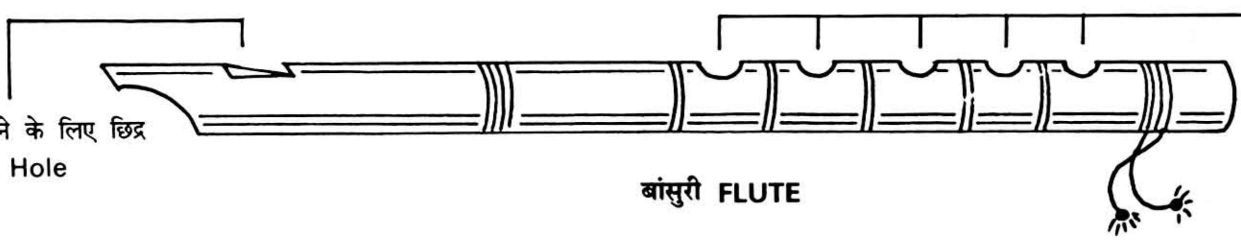

बांसुरी FLUTE

सिन्धु सभ्यता की खुदाई में मृत्तिका शिल्प (मिट्टी) की बनी पक्षी के आकार की सीटियां और मुहरें प्राप्त हुई हैं, जो हवा और ताल वाद्यों को प्रदर्शित करती हैं। बांस, लकड़ी तथा पशु की खाल आदि से बनाए गए संगीत वाद्य कितने भी समय तक रखे रहें, वे नष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि लकड़ी या बांस की बनी बांसुरियां समय के आघात को नहीं सह पाईं। इसी कारणवश हमें पिछली सभ्यताओं की किसी खुदाई में ये वाद्य प्राप्त नहीं होते।

यहां वेदों में 'वेनू' नामक वाद्य का उल्लेख प्राप्त होता है, जिसे राजाओं का गुणगान तथा मंत्रोच्चारण में संगत करने के लिए बजाया जाता था। वेदों में "नांदी" नामक बांसुरी के एक प्रकार का भी उल्लेख प्राप्त होता है। बांसुरी के विविध नाम हैं, जैसे उत्तर भारत में वेणु, वामसी, बांसुरी, मुरली आदि और दक्षिण भारत में पिल्लनकरोवी और कोलालू।

ध्वनि की उत्पत्ति के आधार पर मोटे तौर पर सुषिर अथवा वायु वाद्यों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है—

— बांसुरियां और
— कम्पिका युक्त वाद्य

बांसुरी

इकहरी बांसुरी अथवा दोहरी बांसुरियां केवल एक खोखली नलिका के साथ, स्वर की ऊँचाई को नियंत्रित करने के लिए अंगुली रखने के छिद्रों सहित होती हैं। ऐसी बांसुरियां देश के बहुत से भागों में प्रचलित हैं। लम्बी, सपाट, बड़े व्यास वाली बांसुरियों को निचले (मंद्र) सप्तक के आलाप जैसे धीमी गति के स्वर-समूहों को बजाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। छोटी और कम लम्बाई वाली बांसुरियों को, जिन्हें कभी-कभी लम्बवत् (उर्ध्वाधर) पकड़ा जाता

instruments. Actual musical instruments are made of bamboo, wood, animal hide, etc. which perish when buried for any length of time, hence, flutes made of wood or bamboo have not survived the ravages of time and are not found in excavations of past civilizations.

There is reference in the *Vedas* to an instrument—the *Venu* which was used as an accompaniment to chanting and recitation. There is also mention of a kind of a flute called the *Nadi*. The flute has a variety of names like *Venu, Vamsi, Bansuri, Murali* and so on in the north, and *Pullankuzhal, Pillankarovi* and *Kolalu* in the south. The wind instruments are roughly divided into two categories on the basis of how sound is produced. They are:

– the flutes, and
– the reed instruments

Flutes

Single or double flutes with only one hollow tube with finger holes for controlling the pitch of the note are very common in many parts of the country. Long horizontal flutes with a larger diameter are used to play slow passages such as *Alap* of the lower registers. Smaller and shorter flutes, sometimes held vertically, are used for *Taans*, the faster passages, and also for producing higher pitches of sound. The double flutes are mostly played by musicians of the tribal and rural areas and are rarely found on the concert platform. They resemble beak flutes which have a narrow aperture at one end. One finds references to these types of instruments in the sculptures of the first century in the Sanchi Stupa which shows a musician playing on a double flute.

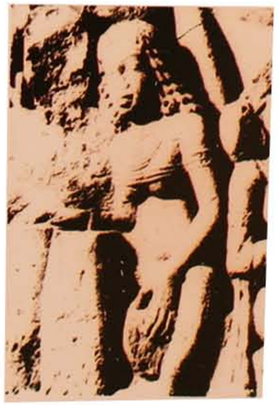

है, द्रुत गति के स्वर-समूह अर्थात् तान तथा ध्वनि के ऊंचे स्वरमान को बनाने के लिए उपयोग में लाया जाता है। दोहरी बांसुरियां अक्सर आदिवासी तथा ग्रामीण क्षेत्र के संगीतकारों द्वारा बजाई जाती हैं और ये मंच-प्रदर्शन में बहुत कम दिखाई देती हैं। ये बांसुरियां चोंचदार बांसुरियों से मिलती-जुलती होती हैं, जिनके एक सिरे पर संकरा छिद्र होता है। हमें इस प्रकार के वाद्यों का उल्लेख प्रथम शताब्दी के सांची के स्तूप के शिल्प में प्राप्त होता है, जिसमें एक संगीतकार को दोहरी बांसुरी बजाते हुए दिखाया गया है।

कम्पिका वाद्य

कम्पिका या सरकंडा युक्त वाद्य जैसे शहनाई, नादस्वरम् आदि वाद्यों में वाद्य की खोखली नलिका के भीतर एक अथवा दो कम्पिका को डाला जाता है, जो हवा के भर जाने पर कम्पित होती हैं। इस प्रकार के वाद्यों में कम्पिकाओं को नलिका के भीतर डालने से पहले एक साथ, एक अंतराल में बांधा जाता है। नलिका शंकु के आकार की होती है। यह हवा भरने वाले सिरे की तरफ से संकरी होती है और धीरे-धीरे दूसरे सिरे पर खुली होती जाती है तथा एक धातु की घंटी का आकार ले लेती है, ताकि ध्वनि की प्रबलता को बढ़ाया जा सके। वाद्य के मुख से एक अतिरिक्त कम्पिकाओं का समूह और कम्पिकाओं को साफ़ करने तथा व्यवस्थित रखने के लिए हाथीदांत अथवा चांदी की एक सुई लटकाई जाती है।

अवनद्ध वाद्य

वाद्यों के वर्ग, अवनद्ध वाद्यों (ताल वाद्य) में पशु की खाल पर आघात करके ध्वनि को उत्पन्न किया जाता है, जो मिट्टी, धातु के बर्तन या फिर लकड़ी के ढोल या ढांचे के ऊपर खींच कर लगायी जाती है। हमें ऐसे वाद्यों के प्राचीनतम उल्लेख वेदों में मिलते हैं। वेदों में भूमि दुंदुभि का उल्लेख है। यह भूमि पर खुदा हुआ एक खोखला गढ़ा होता था, जिसे बैल या भैंस की खाल से खींच कर ढका जाता था। इस गढ़े के खाल ढके हिस्से पर आघात करने के लिए पशु की पूंछ को प्रयोग में लाया जाता था और इस प्रकार से ध्वनि की उत्पत्ति की जाती थी।

ढोलों को उनके आकार, ढांचे तथा बजाने के लिए उनको रखे जाने के ढंग व स्थिति के आधार पर विविध वर्गों में बांटा जा सकता है। ढोलों को मुख्यतः उर्ध्वक, अंकया, आलिंग्य और डमरू (ढोलों का परिवार)—इन चार वर्गों में बांटा जाता है। (आरेख देखें)

उर्ध्वक

उर्ध्वक ढोलों को वादक के समक्ष लम्बवत् रखा जाता है और इन पर डंडियों या फिर उंगलियों से आघात करने पर ध्वनि उत्पन्न होती है। इनमें मुख्य हैं—तबले की जोड़ी और चेंडा।

अंकया

अंकया ढोलों को वादक के समक्ष आड़ा रखा जाता है और अक्सर इसके दोनों सिरे पशु की खाल से ढके जाते हैं। उंगलियों अथवा डंडियों से दोनों ओर आघात करने पर इनमें ताल उत्पन्न होता है।

Reed instruments

Reed instruments like the *Shehnai, Nadaswaram,* etc., have one or two reeds inserted in the hollow beak or tube of the instrument, these vibrate when air is blown into them. In this type of instrument the reeds are bound together with a gap between them before inserting into the body of the instrument. The body of the tube is conical in shape, narrow at the blowing end and opening out gradually with a metallic bell at the farther end to enhance the volume of the sound. A set of spare reeds, an ivory or silver needle for adjusting and cleaning the reeds are also hung from the mouth piece of the instrument.

Avanaddha Vadya

In the *Avanaddha Vadya* category of instruments, sound is produced by striking the animal skin which has been stretched across an earthern or metal pot or a wooden barrel or frame. The earliest references to such instruments have been found in the *Vedas* where there is mention of *Bhumi Dundhubhi*; this was a hollow pit dug in the ground and covered with the hide of a buffalo or ox which was stretched across the pit. The tail of the animal was used for striking the animal hide and thus sound was produced.

Drums have been divided into different categories on the basis of their shapes and structure as also the position and placement for playing. The main categories are—*Oordhwaka, Ankya, Alingya* and the waisted or the *Damaru* family of drums. (see diagrams).

Oordhwaka

The *Oordhwaka* drums are placed vertically before the musician and sound is produced by striking them with sticks or the fingers. Prominent among these are the *Tabla* pair and *Chenda.*

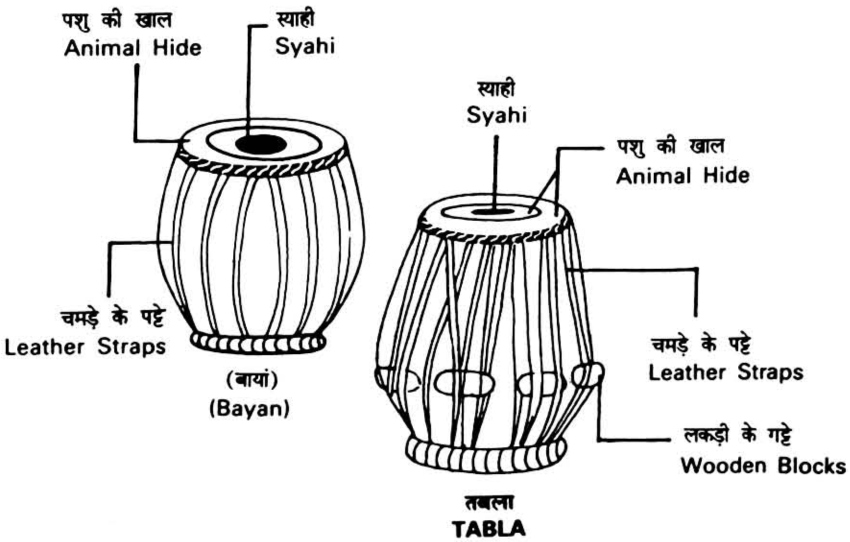

(उर्ध्वक) (Oordhwaka)

आज ढोलों के इस वर्ग में मृदंगम्, पखावज़, खोल आदि प्रमुख हैं। वादक जमीन पर बैठ कर वाद्य को बजा सकता है या फिर नृत्य करते हुए अथवा खड़े होकर बजाते समय वाद्य को गर्दन में भी लटकाया जा सकता है। सिन्धु सभ्यता की खुदाई से प्राप्त मोहरों पर हमें गर्दन में लटके, लम्बवत् ढोलों को बजाते हुए पुरुषों की आकृतियां प्राप्त हुई हैं।

आलिंग्य

तीसरा वर्ग आलिंग्य ढोल हैं। इन ढोलों में पशु की खाल को लकड़ी के एक गोल खांचे पर लगा दिया जाता है और गले या इसे एक हाथ से शरीर के निकट करके पकड़ा जाता है, जबकि दूसरे हाथ को ताल देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इस वर्ग में डफ, डफली आदि आते हैं, जो बहुत प्रचलित वाद्य है।

डमरू

डमरू ढोलों का एक अन्य प्रमुख वर्ग है। इस वर्ग में हिमाचल प्रदेश के छोटे ''हुड्का'' से लेकर दक्षिणी प्रदेश का विशाल वाद्य ''तिमिल'' तक आते हैं। पहले वाद्य को हाथ से आघात देकर बाजाया जाता है, जबकि दूसरे को कंधे से लटका कर डंडियों और उंगलियों से बजाया जाता है। इस प्रकार के वाद्यों को रेतघड़ी वर्ग के ढोलों के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इनका आकार रेतघड़ी से मिलता-जुलता प्रतीत होता है।

घन वाद्य

मनुष्य द्वारा अविष्कृत सबसे प्राचीन वाद्यों को घन वाद्य कहा जाता है। एक बार जब यह वाद्य बन जाते हैं तो फिर इन्हें बजाने के समय कभी भी विशेष सुर में मिलाने की आवश्यकता नहीं होती। प्राचीन काल में यह वाद्य मानव शरीर के विस्तार जैसे डंडियों, तालों तथा छड़ियों आदि के रूप में सामने आए और ये दैनिक जीवन में प्रयोग में लाई जाने वाली वस्तुओं, जैसे पात्र (बर्तन), कड़ाही, झांझ, तालम् आदि के साथ बहुत गहरे जुड़े हुए थे। मूलतः यह वस्तुएं लय प्रदान करती हैं और लोक तथा आदिवासी अंचल के संगीत तथा नृत्य के साथ संगत प्रदान करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं।

Ankya

The *Ankya* drums are held horizontally before the musician and usually both sides are covered with animal hide. Sound is produced by striking both sides with sticks or fingers. Today, in this variety, the *Mridangam, Pakhawaj, Khol,* etc. are prominent. The musician may sit on the floor and play the instrument or hang it from the neck while dancing or standing. Seals which have been excavated of the Indus Civilization show figures of men playing the horizontal drums hung from the neck.

Alingya

The third variety are the *Alingya* drums. These drums have the animal hide fixed to a wooden round frame and are embraced or held close to the body with one hand while the other hand is used for playing on the instrument. Under this category, the *Duff, Dufflies,* etc. are very popular.

Damaru types

Another prominent group of drums are the waisted or *Damaru* variety. The instruments in this category range from, the small *Huddaka* of Himachal Pradesh to the larger instrument known as *Timila* of the southern region. The former is struck with the hands while the latter is hung from the shoulders and played with sticks and fingers. These are also known as the hourglass variety of drums as their shape resembles an hourglass.

Ghana Vadya

The earliest instruments invented by man are said to be the *Ghana Vadya*. Once constructed, this variety of instrument do not need special tuning prior to playing. In early times these instruments were the extension of the human body such as sticks, clappers, rods, etc. and were also closely related to objects of utility in daily life such as pots and pans, *jhanj*, *talams*, etc. They are principally rhythmic in function and are best suited as accompaniment to folk and tribal music and dance.

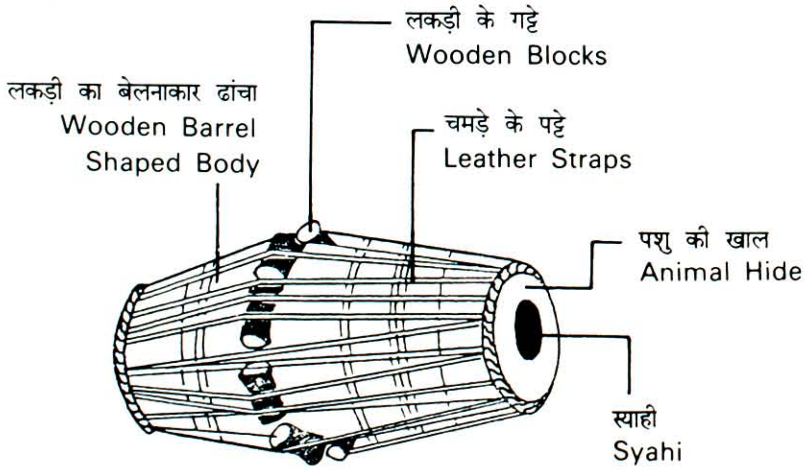

पखावज
PAKHAWAJ

(अंकया) (Ankya)

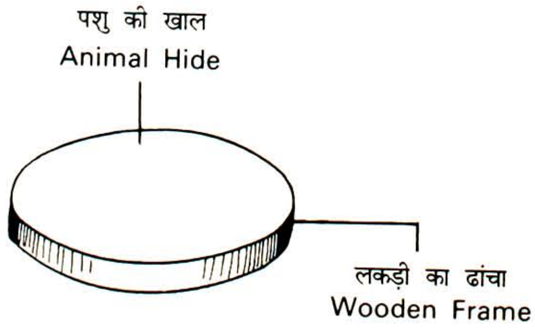

डफ़
DUFF

(आलिग्यं) (Alingya)

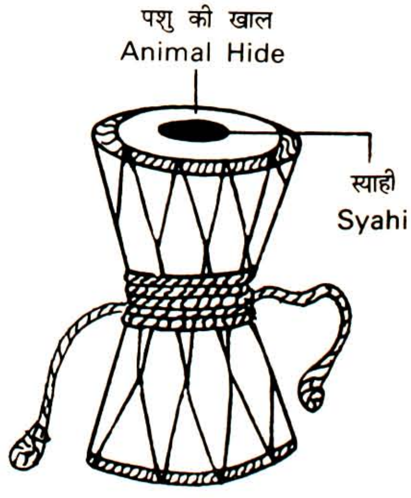

डमरू
DAMARU

स्कूल के छात्रों और अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

Creative Activities for School Students and Teachers

भारत के संगीत वाद्य, भाग 1 में निर्दिष्ट की गई कुछ सामान्य गतिविधियां इस शैक्षणिक संग्रह में भी प्रस्तुत की जा रही हैं।

भारत के संगीत वाद्य, भाग 2 से सम्बंधित अतिरिक्त गतिविधियों के बारे में जानकारी नीचे दी गई है।

इन गतिविधियों का उद्देश्य संगीत के प्रति समझ और मूल्यांकन उत्पन्न करना है तथा चित्रों और मूर्तिकला में दर्शाए गए कुछ संगीत वाद्यों के इतिहास और विकास से छात्रों को परिचित कराना है।

1. संगीत वाद्यों का अध्ययन एक प्रभावशाली गतिविधि हो सकता है। इस संग्रह में दर्शाए गए संगीत वाद्यों के तीन समूहों (वर्गों) का वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ अध्ययन किया जा सकता है, ताकि छात्र उनसे एक अच्छी समझ प्राप्त कर सकें।
   —संगीत वाद्यों के प्रत्येक वर्ग के प्रधान लक्षण (तत्व) क्या है?
   —वाद्य को बनाने के लिए कौन सी सामग्री का उपयोग किया गया है?
   —ध्वनि की उत्पत्ति पर उस सामग्री का क्या प्रभाव पड़ता है?
   —ध्वनि की उत्पत्ति किस प्रकार की जाती है?
   —ध्वनि पर इस्तेमाल की गई सामग्री के घनत्व और वाद्यों के आकार तथा आकृति का क्या प्रभाव पड़ता है?
   —किस प्रकार साधारण वाद्य मंच-प्रदर्शन के वाद्यों से जुड़ जाते हैं?

   सामान अध्ययन के समापन के बाद प्रत्येक छात्र वाद्य के प्रत्येक समूह को पहचानने या उनमें भेद करने के योग्य हो जाएंगे और उनके बारे में विभिन्न जानकारियां पा सकेंगे।

2. भारतीय नृत्य-कलाओं में भी संगीत वाद्यों की विभिन्न मुद्राओं (हवा-भाव) को प्रदर्शित किया गया है। छात्र वीणा, मृदंगम, डमरू, झांझ, ताली बजाना आदि संगीत वाद्यों के लिए नर्तकों के हाव-भाव और शरीर के चित्रों का अध्ययन कर सकते हैं। यहां एक अकेले वाद्य को प्रदर्शित करने या दर्शाने के लिए एक से ज्यादा मुद्राएं हो सकती हैं। इससे चित्रों सहित नक्शे और छायाचित्र (फोटोग्राफ्स) तैयार किए जा सकते हैं। इनसे यह पता चलेगा कि किस प्रकार एक क्रिया या मुद्रा एक वाद्य को प्रदर्शित कर सकती है।

3. आज भी भारत के अनेक भागों में साधारणतः सुषिर वाद्यों (वायु वाद्यों) को प्रयोग में लाया जाता है। भीमबेटका के चित्रों के अध्ययन के बाद छात्रों से उन चित्रों में दर्शाए गए वाद्य की कुल लम्बाई, आकृति और बनावट के बारे में लिखने के लिए कहा जा सकता है। वे इन्हें स्मरण करने की कोशिश कर सकते हैं कि उन्होंने यह वाद्य कहां और किस अवसर पर देखा? उदाहरणार्थ विवाह के अवसर पर और लेज़ियम प्रदर्शन में दुंदुभि एक कुल-चिन्ह के रूप में देखी जा सकती है। छात्रों को वाद्यों के रेखाचित्र बनाने के लिए और उन वाद्यों का प्रयोग किए जाने वाले अवसर का वर्णन करने के लिए एक अनुच्छेद लिखने के लिए कहा जा सकता है। यह क्रिया छात्रों की भाषा में वर्णनात्मक और वाचक कला का विकास करने में उनकी सहायता भी करेगी।

Some of the general activities mentioned in Musical Instruments of India, Part I are relevant for this package also.

Additional activities related to Musical Instruments of India, Part II are listed below.

The aim of the activities is to create an understanding and appreciation of music and to acquaint the students with the history and evolution of some musical instruments through their representations in painting and sculpture.

1. The study of musical instruments can be an effective activity. The three categories of instruments depicted in this package can be studied with a scientific approach so that the students can gain a better understanding of them.
   - what are the salient features of each category of instruments?
   - what material has been used to make the instrument?
   - what effect does the material have on the sound produced?
   - how is the sound produced?
   - what effect do the shapes and sizes of instruments and the thickness of material used have on the sound?
   - how have simple instruments evolved into more sophisticated concert instruments?

   On completion of similar studies, students will be able to distinguish each category of instrument and know various details regarding them.

2. In Indian dance forms there are a variety of gestures depicting musical instruments. The students can study the body postures and gestures for playing on instruments like the *veena, mridangam, damaru,* cymbals, clappers, etc. There can be more than one gesture to represent a single instrument. Charts with drawings, pictures and photographs can be prepared. These will show how well an action or gesture can depict an instrument.

3. Wind instruments are commonly used even today in many parts of India. After studying the Bhimbetka paintings, students may be asked to note down the approximate length, shape and design of the instrument depicted. They should then try and recollect where they have seen this instrument and on what occasions, for example, the trumpeteers in wedding processions or the one heralding a lezim show. They can be asked to draw the instruments and write a paragraph describing the occasion when it was used. This exercise will also help the students to develop their narrative and descriptive skills in language.

4. सारे भारत में सपेरे कम या ज्यादा एक सी धुनों का प्रयोग करते हैं। छात्रों को इन साधारण धुनों में से एक धुन को सीखने तथा इसके बाद स्वर-पद्धति बनाने के लिए कहा जा सकता है। इसके बाद वे एक आरेख (रेखालेख) में वक्ररेखाओं और रेखाओं के उपयोग से धुन की गति (संचलन) को प्रस्तुत करने की कोशिश कर सकते हैं। किस प्रकार की तरंग धुन को प्रभावी (सम्मोहनीय) बनाती है?

5. विभिन्न आकारों की बांस की खोखली नलियां छात्रों को दी जा सकती हैं और वे उनसे अपनी बांसुरियां बना सकते हैं। यह क्रिया छात्रों में इस बात के अध्ययन के लिए रुचिकर होगी कि प्रत्येक बांसुरी के स्वरमान में क्या अंतर है?

6. ध्वनि की उत्पत्ति में विविध प्रकार की सामग्री के प्रभाव का परीक्षण करने के लिए छात्रों से एक क्रम में साधारण संगीतात्मक खिलौने तैयार करने के लिए कहा जा सकता है।

एक बांस के छल्ले के दोनों तरफ दो पतले पेपर (कागज) लगा सकते हैं। एक छड़ी को मूठ से कस कर छल्ले पर लगा सकते हैं। मनकों (मोतियों) के साथ दो धागे इसके साथ जोड़े जा सकते हैं। छड़ी की आवर्ती करके अर्थात् घुमाकर धागों से पेपर के दोनों तरफ प्रहार करें और एक लयात्मक ध्वनि की उत्पत्ति करें। विभिन्न प्रकार के पतले कागजों के प्रयोग से विभिन्न स्वरमानों की उत्पत्ति की जा सकती है। इससे छात्रों को ड्रम (ढोलों) का निर्माण करने में आधारभूत सिद्धांतों को समझने में सहायता मिलेगी।

7. कुछ वाद्यों की रुचिकर विशेषता यह है कि वे मानव शरीर का ही एक विस्तारित रूप हैं। यह इन वाद्यों की बनावट और उनके निर्माण में मानव की कल्पना से तीक्ष्ण उपयोग के प्रतिबिम्ब हैं। वाद्यों या उपकरणों, जिन्हें मानव शरीर के विस्तारित रूप कहा जा सकता है, की एक सूची बनाई जा सकती है और व्याख्याएं दी जा सकती हैं। उदाहरणार्थ कोल्लाटम छड़ी बाहों का एक विस्तारित रूप है। यह गतिविधि छात्रों को अपने आप कोशिश करने तथा समान वाद्य का अविष्कार करने के लिए प्रेरित कर सकती है।

8. भारत में पाए जाने ढोलों के विविध प्रकार तथा मूल्यांकन के क्रम में एक चार्ट बनाया जा सकता है और उसमें प्रत्येक वर्ग के अंतर्गत आने वाले ढोलों का नाम दिया जा सकता है। यदि सम्भव हो तो, ताल-वाद्य कचेरी (मंच-प्रदर्शन) और जुगलबंदी की रिकार्डिंग (अभिलेखन) को एक क्रम में एकत्रित कर छात्रों को दिया जा सकता है, ताकि उन्हें वाद्यों का प्रयोग करने का एक सही तरीका प्राप्त हो सके और वे ध्वनि की गुणवत्ता में अंतरों को भी जान सकें।

9. जो छात्र संगीत में रुचि रखते हैं, उनके लिए स्कूल में गायक-मण्डल और वाद्य-मण्डल शुरू किए जा सकते हैं।

10. छात्र निम्न के गाने-बजाने की शिक्षा ले सकते हैं :

–विविध विषयों पर आधारित प्रादेशिक भाषा के गीत।

–धार्मिक गीत।

–विविध समारोहों और त्यौहारों के गीत।

–विविध व्यवसायों से सम्बंधित गीत, जैसे मल्लाह, ग्वालों और किसानों के गीत।

–जीवन-चक्र तथा कृषि से सम्बंधित गीत।

–हाथों से ताल देकर, लय के साथ हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत के कुछ तालों का प्रस्तुतीकरण।

11. छात्र बेकार सामग्री जैसे लकड़ी, धातु आदि से बनाए गए कामचलाऊ वाद्यों के द्वारा विद्यालय में अपना वादक मण्डल बना सकते है। वे स्वरमानों की विविधता और जो लय उत्पन्न की जा सकती है, पर प्रयोग कर सकते है।

आवरण : शिव का नृत्य, चम्बा, 18वीं सदी Cover: Dance of Shiva, Chamba, 18th Century

4. Snake charmers, all over India use more or less the same tune. Students may be asked to learn one of these simple tunes and then notate it. They can then try and represent the movement of the tune in a diagram using curves and lines. What kind of mood does the tune suggest?

5. Hollow bamboo tubes of different sizes can be given to students and they can make their own flutes. It will be interesting for the students to study the difference in pitch of each flute?

6. Students can be asked to prepare simple musical toys in order to test the effect of various materials on the sound produced.

On a ring of bamboo, two thin papers can be stuck on either side. A stick can be fastened as a handle. Two threads with beads can be attached to it. On rotating the stick, the beads hit the paper sides and produce a rhythmic sound. By experimenting with different types of paper of varied thickness, different pitches of sound can be produced. This will help students to understand the underlying principle in the making of drums.

7. An interesting feature of some instruments is that they are an extension of the human body. This reflects a very keen use of man's imagination in making and designing these instruments. A list of instruments or accessories which can be called extensions of the human body may be prepared and explanations given, for example, *Kollatam* sticks are an extension of the arms. This can motivate students to try and invent similar instrument themselves.

8. In order to appreciate and to get to know the variety of drums that we have in India, a chart may be prepared giving the names of drums under each category. If it is possible, recordings of *Tata-Vadya Kacheris* and *Jugalbandis* can be collected in order to give the students an exact idea of the use of instruments and to note the minor differences in sound quality.

9. For those interested in music, choirs and orchestras can be started in the school.

10. Students can learn to sing and play the following:
- songs in regional languages on a variety of themes
- devotional songs
- songs for various festivals and ceremonies
- songs connected with different occupations, for instance, songs sung by boatmen, cowherds and farmers
- songs related to the agricultural and life cycles.
- recitation of a few talas of *Hindustani* and *Karnataka* music by giving the rhythm and beats with their hands.

11. Students can set up their own orchestras in the school by improvising instruments made of waste material such as wood, metal, etc. They can experiment on the variety of pitches and rhythms that can be produced.

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
2

1. वायु (सुषिर) वाद्य, चित्र, भीमबेटका, मध्य प्रदेश

प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक बहुत से शिल्पों तथा चित्रों में सुषिर वाद्यों या हवा के वाद्यों को प्रदर्शित किया गया है। यह चित्र मध्य प्रदेश में भोपाल के निकट, भीमबेटका की गुफाओं से लिए गए एक चित्र को प्रदर्शित करता है। यहां पर दिखाया गया सुषिर वाद्य एक प्रकार की तुरही (भोंपू) है। हमारे पास इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि किस आधार पर गुफावासियों ने इस वाद्य का नामकरण किया था।

2. बांसुरी

इस चित्र में कलाकार एक सपाट बांसुरी बजा रहा है। बांसुरी का यह प्रकार धीमी गति के स्वर-समूह अथवा भारतीय संगीत में आलाप बजाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है। बांसुरी का यह प्रकार मंच-प्रदर्शन में लोकप्रिय है। हरिप्रसाद चौरसिया, सिक्किल बहनें और एन. रमानी वर्तमान समय के प्रमुख प्रसिद्ध बांसुरी वादक हैं।

3. विविध नृत्य शैलियों में बांसुरी की मुद्रा

नृत्य की प्रायः सभी शैलियों में बांसुरी बजाने की मुद्रा प्रदर्शित की गई है। विविध प्रदेशों के नृत्यों में बांसुरी पर हाथों तथा अंगुलियों को रखने का ढंग भिन्न-भिन्न होता है और भरतनाट्यम्, कथक, ओडिसी, मणिपुरी और कथकली जैसे नृत्यों में बांसुरी की मुद्रा को प्रदर्शित करने के लिए हाथों को रखने के ढंग में थोड़ा-सा अन्तर होता है। हालांकि यह नृत्य शैलियां विविध राज्यों में उत्पन्न हुई पर अब सम्पूर्ण देश में इनका प्रदर्शन होता है। इन नृत्य शैलियां सहित अन्य कई शैलियां बाहर के बहुत से देशों में प्रदर्शित की जाती हैं तथा सराही जाती हैं।

4. परंपरागत कालीघाट चित्र, 19वीं सदी

कृष्ण को बांसुरी वादक के रूप में, विविध कालों में, सारे देश की बहुसंख्यक शैलियों के चित्रों में प्रदर्शित (चित्रित) किया गया है। इस चित्र में कृष्ण को उसके पार्श्व में खड़ी राधा के साथ बांसुरी बजाते हुए दर्शाया गया है। यह पश्चिमी बंगाल का कालीघाट चित्र है, जो कि अपनी आकृतियों के सुस्पष्ट रेखांकन और रंगों के प्रभावशाली उपयोग के लिए जाना जाता है।

5. गीत गोविन्द, चित्र, राधा के साथ कृष्ण, पूर्व 18वीं शताब्दी

भारतीय चित्रकला में कृष्ण का चित्रण बांसुरी वादक के रूप में एक सर्वाधिक विषय वस्तु है। प्रस्तुत चित्र, पूर्व 18वीं शताब्दी के गीत गोविन्द की सचित्र पांडुलिपि से लिया गया है। इस चित्र में, कृष्ण बांसुरी बजा रहे हैं जबकि राधा ने अपने हाथ में कमल का फूल पकड़ा हुआ है।

6. अलगोज़ा

पंजाब का अलगोज़ा और उत्तर भारत के अन्य भागों में पाया जाने वाला अलगोज़ा दोहरी बांसुरी का एक दिलचस्प नमूना है। इसमें दो बांसुरियां भली प्रकार एक-दूसरे से जुड़ी हो सकती हैं या फिर दोनों को खुला करके हाथों में पकड़ा जा सकता है। इनको एक के बाद एक करके बजाया जाता है। दोनों में से एक बांसुरी केवल मूल स्वर प्रदान करती हैं, जबकि दूसरी को राग इत्यादि बजाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। अलगोज़ा से मिलता-जुलता एक वाद्य राजस्थान में बहुत मिलता है। इसे 'सतारा' के नाम से जाना जाता है पर यह अलगोज़ा से थोड़ा-सा लम्बा होता है और उसका सप्तक भिन्न होता है।

7. शहनाई

शहनाई एक कम्पिका युक्त वाद्य है। इसमें नलिका के ऊपर सात छिद्र होते हैं। इन छिद्रों को अंगुलियों से बंद करने और खोलने पर राग बजाया जा सकता है। इस वाद्य को "मंगल वाद्य" के नाम से जाना जाता है और अक्सर इसे उत्तर भारत में विवाह, मंदिर उत्सवों आदि के मंगल अवसर पर बजाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि शहनाई भारत में पश्चिम एशिया से आई। कुछ अन्य विद्वान भी हैं, जो यह मानते हैं कि यह वाद्य चीन से आया है। इस समय यह वाद्य कार्यक्रमों में बजाया जाने वाला प्रसिद्ध वाद्य है। वाद्य की आवाज़ सुरीली होती है और यह राग संगीत को बजाने के लिए उपयुक्त है। इस शताब्दी के सन् पचास के दशक के पूर्व भाग में इस वाद्य को प्रसिद्ध बनाने का श्रेय उस्ताद बिस्मिल्लाह खान को जाता है। आज के जाने-माने शहनाई वादकों में पंडित अनंत लाल और पंडित दया शंकर का नाम प्रमुख है।

8. नादस्वरम्

नागस्वरम् या दक्षिण प्रदेश का नादस्वरम् शहनाई से बहुत कुछ मिलता-जुलता वाद्य है। यह वाद्य बड़ा होता है और यह विवाह के समय द्वारों और मंदिर उत्सवों में बजाने के लिए उपयुक्त है। इसके आकार के कारण इसको बजाने से जो ध्वनि निकलती है, वह कम्पिका युक्त वाद्यों के परिवार के अन्य वाद्यों की तुलना में बहुत तेज होती है।

इस कम्पिका युक्त वाद्य में राग-संगीत बजाने के लिए सात छिद्रों के अलावा नलिका के निचले हिस्से के साथ पांच अतिरिक्त छिद्र होते हैं। इन्हें बजाने के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाता, बल्कि मूल स्वर सप्तक को व्यवस्थित (समन्वित) करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इन छिद्रों में से एक या एक से अधिक छिद्रों को मोम से बंद किया जा सकता है। नादस्वरम् के साथ ताल की संगत के लिए तवल, मृदंगम्, महालम् अथवा चेंडा का प्रयोग किया जाता है।

दक्षिण में नागस्वरम् शब्द का अर्थ साँप को सम्मोहित करने वाली बीन (उत्तर भारत में पुंगी बीन) और शादी व मंदिर उत्सवों आदि में प्रचलित दोहरे कम्पिका वाद्य से ही है और इसे संगीत समारोहों में बजाया जाता है।

9. पुंगी बीन

पुंगी बीन को आम तौर पर सांप को आकर्षित करने वाली बीन के नाम से जाना जाता है। इसकी बनावट बहुत दिलचस्प है। एक छोटे तुम्बे (अनुनादक) में एक नलिका को डाला जाता है। हवा तुम्बे में एकत्रित हो जाती है और फिर दो बांस अथवा कम्पिका (सरकंडे की) नलियों से होकर गुजरती है, जिन्हें निचले सिरे में डाला जाता है। दोनों नलिकाएं ध्वनि उत्पन्न करती हैं पर केवल एक से ही मूल स्वर उत्पन्न होता है। (जैसे कि दोहरी बांसुरियों में निकलता है) और दूसरी नलिका पर स्थित छिद्रों पर अंगुली रखकर हवा के आवागमन को नियंत्रित करके राग-संगीत बजाया जाता है।

10. मुखौटा नृत्य, भीमबेटका चित्र, मध्य प्रदेश

पूरे देश के ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों में सामूहिक नृत्यों के साथ ताल की संगत ढोल ही प्रदान करते हैं। आज भी मुखौटा नृत्य बहुत प्रचलित हैं। देश के विविध भागों के मुखौटों की अपनी प्रादेशिक विशेषताएं होती हैं। मध्य प्रदेश की भीमबेटका गुफाओं का यह चित्र 5000 वर्ष पुराना है। यह चित्र नर्तकों के एक समूह को प्रदर्शित करता है। चित्र में एक नर्तक ने मुखौटा पहना हुआ है और अन्य व्यक्ति समतल (अंकया) और गले से लगे (आलिंग्य) ढोलों को बजा रहे हैं।

11. तबला

तबले की जोड़ी दो लम्बवत् ऊर्ध्वक ढोलों का एक समूह है। इसके दायें हिस्से को तबला कहा जाता है और बायें हिस्से को बांया अथवा 'डग्गा' कहते हैं। तबला लकड़ी का बना होता है। इस लकड़ी के ऊपरी हिस्से को पशु की खाल से ढका जाता है और चमड़े की पट्टियों की सहायता से जोड़ा जाता है। चर्म पट्टियों तथा लकड़ी के ढांचे के बीच आयताकार (चौकोर) लकड़ी के गट्टे रखे जाते हैं। इन्हें तबले को स्वर में मिलाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। पशु की खाल के हिस्से के बीच में स्याही का मिश्रण लगाया जाता है। तबले को हथौड़ी से ऊपरी हिस्से के किनारों को ठोंक कर उपयुक्त स्वर को मिलाया जा सकता है। बांया हिस्सा मिट्टी अथवा धातु का बना होता है। इसका ऊपरी हिस्सा पशु की खाल से ढंका जाता है और उस पर भी **स्याही** का मिश्रण लगाया जाता है। कुछ संगीतकार इस हिस्से को सही स्वर में नहीं मिलाते।

तबले की जोड़ी को हिन्दुस्तानी संगीत के कंठ तथा वाद्य-संगीत और उत्तर भारत की कई नृत्य शैलियों के साथ संगत प्रदान करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। तबले पर हिन्दुस्तानी संगीत के कठिन ताल भी बहुत प्रवीणता के साथ बजाए जाते हैं। वर्तमान समय के कुछ प्रमुख तबला वादक हैं—उस्ताद अल्ला रक्खा खां और उनके सुपुत्र ज़ाकिर हुसैन, शफ़ात अहमद और सामता प्रसाद।

12. अजंता ढोल, शिल्प, महाराष्ट्र

पुस्तकों में प्राप्त होने वाले उल्लेख के अतिरिक्त हम प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान काल तक की शिल्प तथा चित्रकला में संगीत वाद्यों का प्रस्तुतीकरण देख सकते हैं। अजंता का प्रथम शताब्दी का यह शिल्प, वादक को लम्बवत् (उर्ध्वाधर) ढोलों की एक जोड़ी के पीछे बैठा हुआ प्रदर्शित करता है। यह ढोल हमारे आज के मंच-प्रदर्शन में प्रयुक्त होने वाली तबला तथा बांया की जोड़ी से मिलते हैं।

13. चेंडा

उर्ध्वक ढोलों का यह प्रकार केरल तथा कर्नाटक के कुछ हिस्सों में बहुत लोकप्रिय है। यह खोखली लकड़ी को पशु के चमड़े से मढ़ कर तथा रस्सी से कस कर बना हुआ एक लम्बवत् ढोल है। ध्यान से देखिए, इस वाद्य में चमड़े की पट्टियां प्रयुक्त नहीं की जातीं। इस वाद्य को उपयुक्त स्वर में मिलाने के लिए रस्सियों को कसा जाता है तथा हथौड़ी से ऊपरी हिस्से के किनारों को ठोंका जाता है। इसे डंडी (छड़ी) और उंगलियों की सहायता से बजाया जाता है। यह प्रदेश के कथकली नृत्य, यक्षगान प्रस्तुति और अन्य आनुष्ठानिक नृत्यों और थियेटर के रूपों में प्रयुक्त किया जाने वाला एक प्रमुख ताल वाद्य है।

14. नगाड़ा

नगाड़ा छोटे लम्बवत् (उर्ध्वाधर) ढोलों का एक प्रकार है, जो आम तौर पर लोक संगीत को संगत प्रदान करता है। विद्वानों का मानना है कि इस ढोल का नाम पश्चिम एशिया के **नकारा** से लिया गया है। बहुत से शहनाई वादक तबले की जोड़ी के साथ नगाड़ा ढोलों को संगत देने के लिए प्रयोग में लाते हैं, ताकि मंच-प्रदर्शन में ताल की संगत मिल सके। नगाड़े की जोड़ी में दो शंकु आकार के ढोल होते हैं। यह विविध आकारों के होते हैं। छोटे ढोल को **"झील"** अथवा **"माड़ी"** के नाम से और बड़े को **"नूर"** के नाम से जाना जाता है। आकार में विविधता के कारण दोनों ही ढोलों का स्वर-मान, स्वर की ऊंचाई भिन्न होती है। नगाड़े की जोड़ी आकार में छोटी होती है, इसलिए इसे आसानी से इधर-उधर ले जाया जा सकता है और इसे ऊंटों तथा घोड़ों पर ले जाते हुए देखा जा सकता है।

15. मृदंगम्

मंच-प्रदर्शन में प्रयुक्त होने वाला मृदंगम् भारत का सबसे प्राचीन ढोल है। जैसा कि नाम से प्रतीत होता है, यह ढोल अवश्य ही मिट्टी से बनाया जाता होगा क्योंकि 'मृत' का अर्थ मिट्टी होता है। यह वाद्य आम तौर पर कंठ-संगीत (गायन) और वाद्य-संगीत तथा दक्षिणी प्रदेश की विविध नृत्य शैलियों के साथ संगत प्रदान करता है। आधुनिक मृदंगम् की बनावट बहुत ही साधारण है। एक खोखले लकड़ी के ढोल के दो खुले सिरों को पशु की खाल से ढंका जाता है। इन्हें चमड़े की चर्मपट्टियों द्वारा एक-दूसरे के साथ जोड़ा जाता है, जिन्हें उपयुक्त स्वरमान (सप्तक) के अनुसार कसा जाता है। वाद्य की दाहिनी बाज़ू (सीधी तरफ) स्थायी रूप से स्याही से ढंकी रहती है। इस स्याही में लोह चूर्ण, गोंद, काजल इत्यादि का मिश्रण होता है। यह काला मिश्रण पशु की खाल पर लगाया जाता है, ताकि ध्वनि की संगीतात्मकता (सुर) बनी रहे। सामान्यतः पशु की खिंची हुई खाल पर आघात किए जाने से जो ध्वनि उत्पन्न होती है, उसमें नाद नहीं होता और वह कर्णप्रिय नहीं होती। स्याही लगाने पर ध्वनि में गहराई उत्पन्न होती है। ढोल के बांयी ओर कुछ नहीं लगाया जाता पर बजाने की दृष्टि से वहां पर गूंथे हुए आटे का मिश्रण लगाया जाता है। वाद्य को वादक के समक्ष रखा जाता है। वादक जमीन पर बैठ कर इसे बजाता है। भारतीय ताल पद्धति के सर्वाधिक कठिन संगीत को इस वाद्य पर बजाया जाता है। पालघाट रघु और उगायालापुरम शिवरामन् इस वाद्य को बजाने वाले लोकप्रिय वादक हैं।

16. पखावज

पखावज भी उत्तर भारत के सर्वाधिक प्राचीन ढोलों में से एक है। यह एक लकड़ी का गोलाकार (बेलनाकार) ढोल होता है, जो बीच में से उभरा हुआ होता है और सिरे (कोने) की ओर इसका उभार कम होता है। दोनों ही खुले सिरों पर पशु की खाल को लगाया (मढ़ा) जाता है और इसे चमड़े की बद्धियों (पट्टियों) से एक-साथ कसा जाता है। इन चमड़े की पट्टियों को बेलनाकार लकड़ी के गट्ठों के नीचे रखा जाता है। वाद्य को उपयुक्त स्वर में मिलाने के लिए इनका उपयोग किया जाता है। दक्षिण भारत के मृदंगम में ये बेलनाकार लकड़ी के गट्टे नहीं होते।

वाद्य को ठीक स्वर (सुर) में मिलाने के लिए उसके किनारों को हथौड़ी से ठोका जाता है। इसको बजाते समय रखने का तरीका मृदंगम जैसा ही होता है। वाद्य को संगीतकार (वादक) के समक्ष रखा जाता है। वादक ताल देने के लिए वाद्य के दोनों सिरों पर थाप देता है। इसका एक सिरा काले रंग के मिश्रण (स्याही) से मढ़ा होता है और दूसरे सिरे पर बजाने से पूर्व गूंथा हुआ आटा लगाया जाता है। इस वाद्य से कंठ-संगीत (गायन) और वाद्य-संगीत को संगति प्रदान की जाती है और इस वाद्य से गायन की सर्वाधिक विस्तृत और परिष्कृत शैलियों 'ध्रुपद' और 'धमार' के साथ संगति की जाती है। मंच-प्रदर्शन में यह वाद्य लोकप्रिय है और यह वाद्य कथक तथा ओडिसी जैसी नृत्य शैलियों में ताल की संगति प्रदान करता है। पंडित गोपाल दास उच्च कोटि के पखावज वादक हैं।

17. राग मेघ मल्हार, मेवाड़, 18वीं सदी

राग मेघ मल्हार ऋतु-राग है और यह वर्षा ऋतु में गाया या बजाया जाता है। विभिन्न शैलियों में रागमाला श्रृंखला के तहत् अनेक रागों को दर्शाया व चित्रित् किया गया है। प्रस्तुत चित्र में आप वर्षा का दिन होने के कारण आकाश में घिरे काले बादल, मोर और नृत्य करती नर्तकी को समतल प्रकार के ढोल अंकया को बजाता हुआ देख सकते हैं।

वर्षा ऋतु संपूर्ण भारत में महत्व रखती है, कारण वर्षा का आगमन शुष्क, ग्रीष्म ऋतु से राहत पहुंचाता है। हमारा कृषि प्रधान समाज खेतों की सिंचाई हेतु वर्षा पर निर्भर होता है तथा वर्षा के आगमन का उत्सुकता से इंतजार करता है।

18. संगीतकार, सूर्यमंदिर, कोणार्क, ओड़िशा

ओड़िशा के कोणार्क के सूर्य मंदिर में संगीतकारों तथा नर्तकियों की अनेक प्रतिमाएं हैं। इनमें से कुछ समूह में दर्शायी गई हैं तो कुछ इस प्रतिमा की तरह एक अकेली नर्तकी की हैं। यहां आप नर्तकी को एक समतल ढोल बजाते हुए देख रहे हैं। इस नर्तकी के हाथ व पांव की मुद्राओं को ध्यान से देखिए, यह वर्तमान समय में प्रचलित कुछ नृत्य-रूपों में पाई जाने वाली मुद्राओं के समान हैं।

19. डफ

डफ ढोलाकार (बेलनाकार) बनावट के आलिंग्य वर्ग का वाद्य है। यह एक गोलाकार लकड़ी का ढांचा होता है, जिसके एक ओर पशु की खाल (चमड़ी) मढ़ी रहती है। इसे कभी-कभी बाज़ू के नीचे या फिर एक हाथ से कंधे के ऊपर करके पकड़ा जाता है। जबकि दूसरा हाथ थाप देने के लिए प्रयोग में लाया जाता है, ताकि ताल की उत्पत्ति हो सके।

20. खड़ताल वादक, चित्र, भीमबेटका, मध्य प्रदेश

भीमबेटका की गुफाओं के इस प्राचीन चित्र में हम नृत्य करते हुए कुछ मानव आकृतियों तथा उन्हें एक प्रकार का ताल वाद्य 'खड़ताल' बजाते हुए देख सकते हैं। हालांकि हम यह नहीं जानते कि प्रागतिहासिक काल में जो लोग इसे बजाते थे, वे इसे किस नाम से पुकारते थे।

21. झांझ वादक, कोणार्क, ओड़िशा

ओड़िशा के कोणार्क स्थित सूर्य मंदिर में हम एक 8 फीट ऊंचा शिल्प देख सकते हैं, जिसमें एक स्त्री को झांझ बजाते हुए प्रदर्शित किया गया है।

22. भैरवी रागिनी, मालवा, 1680 ईसवी सन्

इस चित्र में भैरवी रागिनी को दर्शाया गया है, जो सामान्यतः पूजा के एक दृश्य का चित्रण करता है। चित्र में संगीतकार ढोल बजा रहे हैं। गर्भ-गृह के एकदम बाहरी हिस्से में एक घण्टा और एक शंख दिखाई दे रहे हैं। यहां तक कि आज भी अनेक मंदिरों में दर्शन से पहले और दर्शन के समय धार्मिक गीत गाए जाते हैं। संगीतकार देवी के सामने वाद्य बजाते हैं, गीत गाते हैं और नृत्य करते हैं।

23. अलंकृत मिट्टी का घड़ा

भारत के कुछ भागों में मिट्टी के घड़े को संगीत वाद्य के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। यह वाद्य लोक तथा जनजातीय संगीत के साथ ताल की संगत देने हेतु प्रयोग में लाया जाता है। देश के कई भागों में घड़े के मुंह पर ताल देने हेतु हाथों से थाप दी जाती है।

24. घटम्

केवल भोजन पकाने, अनाज तथा पानी एकत्रित करके रखने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले पात्रों (बर्तनों) ने भी संगीतकारों की कल्पना को जागृत किया है। आज कर्नाटक संगीत के मंच प्रदर्शनों में विशेष प्रकार की मिट्टी से बने तथा सावधानी से पकाए गए बर्तन ने संगीत में अपना एक विशेष स्थान बना लिया है। इस पात्र को 'घटम्' के नाम से जाता है। इस विशेष रूप से पकाए गए मिट्टी के घड़े को अक्सर उलटा करके बजाया जाता है। बजाते समय इस पात्र के मुख को वादक के पेट पर रखा जाता है। कुछ वादक बजाते हुए घड़े को अपने सामने रखते हैं और बजाते हुए ज़मीन पर उंगली से ताल देते हैं। घटम् द्वारा कंठ तथा वाद्य-संगीत को संगत प्रदान की जाती है और घटम् पर कर्नाटक ताल शैली के कठिन ताल संयोजनों को बजाया जाता है। जाने-माने घटम् वादकों में के.एस. मंजुनाथ व टी.एच. विनायक रामन का नाम लिया जा सकता है।

भारत के संगीत वाद्य
MUSICAL INSTRUMENTS OF INDIA
2

1. Wind Instruments, Painting, Bhimbetka, Madhya Pradesh

Wind instruments have been depicted in many sculptures and paintings from prehistoric times to date. This picture shows a painting in the caves from Bhimbetka near Bhopal, in Madhya Pradesh. The wind instrument shown here is a kind of trumpet, however, we do not have any information on what the cave dwellers might have named it.

2. Flute

This picture shows an artist playing on an horizontal flute. This type is best suited to playing the slower passages or the alap in Indian music and is popular on the concert platform. Prominent flutists today are Hari Prasad Chaurasia, the Sikkil sisters and N. Ramani.

3. Gesture for flute in Dance forms

The gesture for playing the flute is depicted in almost all the dance styles. The position of the hands and the fingers vary in dances belonging to different regions and there are slight variations in the position of the hands for portraying the gesture in dance forms like Bharatnatyam, Kathak, Odissi, Manipuri and Kathakali. Though these dances originated in different states, they are now performed all over the country. These dance styles and many other forms are also being performed and appreciated in many countries abroad.

4. Traditional Kalighat Painting, 19th Century

Krishna as the flute player has been depicted in painting in numerous styles all over the country in different periods of time. This picture shows Krishna playing the flute with Radha standing beside him. This is a Kalighat painting of West Bengal which is known for its bold drawing of figures and dramatic use of colours.

5. Gita Govinda, Painting, Krishna with Radha, early 18th Century

Krishna as a flute player is a well known theme of Indian painting. This painting is from the illustrated manuscript of Gita Govinda of early eighteenth century. In this picture, Krishna is playing the flute while Radha is holding a lotus in her hand.

6. Algoza

The Algoza from Punjab and other parts of North India is an interesting variety of the double flute. Two flutes may be tightly fixed to each other or the two can be held loosely in the hands. They are blown into simultaneously, though, one of them provides only the drone or basic note while the other is used for playing the melody. Similar to the Algoza but slightly longer and of a different pitch is an instrument mostly found in Rajasthan known as the Satara.

7. Shehnai

The Shehnai is a reed instrument in which there are seven holes along the tube which are used for playing the melody by opening and closing them with the fingers. It is known as a Mangal vadya and is usually played on all auspicious occasions in north India such as marriages, temple festivals, etc. The Shehnai is considered to have come to India from West Asia, there are other scholars who believe that this instrument travelled to China from India. It is now a popular instrument in concerts, the sound is very sweet and suited for playing Raga Sangeet. In the early fifties of this century, Ustad Bismillah Khan is credited for popularising this instrument. Today, Pandit Anant Lal, Pandit Daya Shankar are also noted Shehnai players.

8. Nadaswaram

Very similar to the Shehnai, the Nagaswaram or Nadaswaram of the southern region is, however, a larger instrument and is mostly suited for playing outdoors in marriage processions and temple functions. Due to its size, the sound produced is much louder than the other instruments of the family of reed instruments. This reed instrument has, apart from the seven holes for playing the melody, an additional five holes along the bottom of the tube. These are not used for playing but for adjusting the basic pitch, one or more of these holes can be plugged with wax. The accompanying percussion instruments with the Nadaswaram are the taval, mridangam, maddalam or chenda.

The word Nagaswara in the South refers both to the snake charmer's pipe (Pungi Been in North India) as also the double reed instrument popular at temple functions, marriages, etc., and now played in concerts as well.

9. Pungi Been

The construction of the Pungi Been, more commonly known as the snake charmer's pipe is quite interesting. A tube is inserted into a small gourd. This is used for blowing air which collects in the gourd making it pass through two bamboo or reed pipes, which are inserted into the lower end. Both pipes produce sound, but one produces only the drone (as in the double flutes) and the melody is played on the other pipe by controlling the passage of air through the finger holes.

10. Masked Dances, Bhimbetka Painting, Madhya Pradesh

All over the country, drums provide rhythmic accompaniment to group dances being performed in the rural and tribal areas. Masked dances are very popular even today, the masks from different parts of the country have their own regional peculiarities. This painting from the Bhimbetka caves of Madhya Pradesh which is 5000 years old shows a group of dancers. One dancer is wearing a mask and others are playing the horizontal (Ankya) and the embraced (Alingya) type of drums.

11. Tabla

The Tabla pair is a set of two vertical Oordhwaka drums. The right side is called the Tabla and the left, the Bayan or Dagga. The Tabla has a wooden body with a covering of animal skin, this is held together with leather straps. Between the straps and the wooden body, oblong wooden blocks are placed. These are used for tuning the drums. There is a syahi paste applied in the centre of the animal skin, the tabla can be tuned accurately by striking the rims with a hammer. The body of the bayan is made of clay or metal and is covered with animal skin which also has *syahi* paste applied on it. Some musicians do not tune this drum to an accurate pitch.

The tabla pair is used as accompaniment to vocal and instrumental Hindustani music and with many dance forms of northern India. The complicated talas of the Hindustani music are played with great virtuosity on the tabla. Prominent musicians playing the tabla today are—Ustad Alla Rakha Khan and his son Zakir Hussain, Shafat Ahmed and Samata Prasad to name a few.

12. Ajanta Drums, Sculpture, Maharashtra

Apart from textual references, representations of musical instruments are to be seen in sculptures and paintings from prehistoric times to the present day. The first century sculpture of Ajanta shows a musician sitting behind a pair of vertical drums. These resemble the Tabla and Bayan pair that we see on the concert platform today.

13. Chenda

This variety of Oordhwaka drum is very popular in Kerala and some parts of Karnataka. It is a vertical drum made of hollow wood with a covering of skin held together with ropes. Notice that leather straps are not used in this instrument. The tuning is done by tightening the ropes and striking the rims with a hammer. It is played by using a stick and the fingers. It is one of the prominent percussion instruments used in Kathakali dance, Yakshagana performances and many other traditional and ritual dance and theatre forms of the region.

14. Nagara

The Nagara is a variety of small vertical drums which usually provides accompaniment to folk music. Scholars believe that the name of the drum has been derived from *naqqara* from Western Asia. Many Shehnai players use the nagara drums along with the tabla pair to provide rhythmic accompaniment in their concert performance. The nagara pair are two conical drums. They are of different sizes, the smaller referred to as *jheel* or *madi* and the larger as *Nar*. Because of the differences in size, the volume and pitch varies in both the drums. Since the Nagara pair is small in size, it is easily portable and is seen carried on backs of camels, horses etc.

15. Mridangam

The Mridangam is one of the most ancient drums in India used today on the concert platform. As the name suggests this drum must have been made of clay; Mrit, i.e., clay. It usually provides accompaniment to vocal and instrumental music and dance forms of the southern regions. The structure of the modern Mridangam is very simple. The animal hide covers the two open ends of a hollow wooden barrel. These are joined together by leather straps which can be tightened to suit the required pitch. The right hand side of the instrument has a permanent loading which is known as *syahi*. It is a combination of iron filings, glue, soot, etc. The black paste is applied to the animal skin, to allow for musicality of the sound. Normally when the stretched skin is struck, the sound produced has no resonance and is harsh to the ears. The application of this *syahi* makes the sound mellow. The left face is usually blank, but prior to playing, a paste of dough is applied to it. The instrument is held before the musician who sits on the floor. The most intricate talas of the Indian music are played on this instrument. Palaghat Raghu and Umayalapuram Sivaraman are popular artists of this instrument.

16. Pakhawaj

The Pakhawaj is one of the most ancient drums of north India. It is a wooden barrel drum bulging in the middle and tapering towards the end. The animal skin placed on both open ends is held together with leather straps and beneath these are placed cylindrical wooden blocks. These are used for tuning. The Mridangam of south India does not have these cylindrical wooden blocks. Finer tuning is done by striking the rims with a hammer. The playing postion is similar to that of the Mridangam, where the instrument is placed in front of the musician, who plays on both sides to provide rhythm. One side is covered with black paste—*syahi*, and the other has a temporary application of dough applied just before playing. The instrument accompanies vocal and instrumental music and the most elaborate and sophisticated style of singing known as Dhrupad and Dhamar. It is a popular instrument on the concert platform and also provides rhythm in dance forms such as Kathak and Odissi. A senior Pakhawaj player is Pandit Gopal Das.

17. Raga Meghamalhar, Mewar, 18th Century

Raga Meghamalhar is a seasonal melody and is sung or played in the rainy season. Many ragas have been visualised and painted under the Ragamala series in different schools. In this picture you see dark clouds on a rainy day, the peacock and

the dancer playing on the 'ankya' variety of the horizontal drum while she dances.

The rainy season is important throughout India as it brings welcome relief from the dry hot summer. The agricultural society, dependent on the rain for irrigation of the fields also looks forward eagerly to the rains.

18. Musician, Surya Mandir, Konarak, Odisha

In the Surya Mandir of Konarak, Odisha, there are many sculptures of musicians and dancers, shown sometimes in groups and sometimes, as in this sculpture, a single dancer. Here you see her playing on a horizontal drum. Notice her feet and hand positions which are similar to those found in some dance forms prevalent in India today.

19. Duff

The duff belongs to the category of barrel frame drums of the Alingya group. The structure is a circular wooden frame covered with skin on one side. It is sometimes held under the arm or lifted above the shoulder with one hand while the other hand is used for striking it for producing the rhythm.

20. Castanet Players, Painting, Bhimbetka, Madhya Pradesh

From early paintings from the Bhimbetka caves we see figures dancing and playing a type of castanets—the Khartal.

However, we do not know what they were called by the people who used these in the prehistoric times.

21. Jhanj Player, Konarak, Odisha

In the Sun temple of Konarak, Odisha, we see this large sculpture nearly 8ft. high of a lady playing the Jhanj.

22. Bhairavi Ragini, Malwa 1680 A.D.

This picture shows the Ragini Bhairavi which usually portrays a scene of worship. Musicians playing on a drum, a gong and a conch are seen just outside the Garbha Griha. Even today in many temples, devotional songs are sung before and at the time of darshan. The musicians play instruments and sing and dance before the deity.

23. Decorated Mud Pot

In several parts of India, the Mud Pot is used as a musical instrument. It provides percussion accompaniment for Folk and Tribal Music. In many parts of the country, the rim of the mouth of the pot is struck with the hands to provide rhythm.

24. Ghatam

Pots which are extensively used for cooking, storing grains and water, also inspired the imagination of the musicians. Today, pots made of special clay and carefully burnt find a place in concerts of Karnataka music. Known as the Ghatam, this specially baked mud pot is mostly held upside down with the mouth of the pot on the belly of the player. However, some musicians prefer to keep the pot before them while tapping the surface with the fingers for playing. The Ghatam accompanies both vocal and instrumental music and intricate rhythmic combinations of the Karnataka tala system are produced on this instrument. Noted artists performing on the Ghatam today are K.S. Manjunath and T.H. Vinayaka Raman.